गुरु - भक्ति

* तुम अभी तक न तो गुरु को जान पाये हो और न भक्ति तत्व को।
* गुरु मंत्र-जप गुरु के साहचर्य का प्रतीक है।
* पर इससे भी आगे बढ़ कर गुरु को अपने हृदय में उतारना होगा।
* जब गुरु के वियोग में, विना उसको देखे आंखें डबडबायेंगी तो भक्ति का व्दार स्वतः खुल जाएगा।
* जब तुम्हारे गले में हिचकी, उच्छवास, सिसकारी ध्वनित होगी, तब मन की सितार पर स्वतः समाधि की प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाएगी।
* और जब आंखों से अश्रुकण निकल कर गालों पर से लुढ़कने लग जाएंगे, चारों तरफ फुल खिल जाएंगे, और तुम्हारा मन स्वतः शान्त हो जाएग, इसी को समाधि कहते हैं।

गुरौ एव धर्मः

गुरु साध[illegible]ए

एवं [illegible]
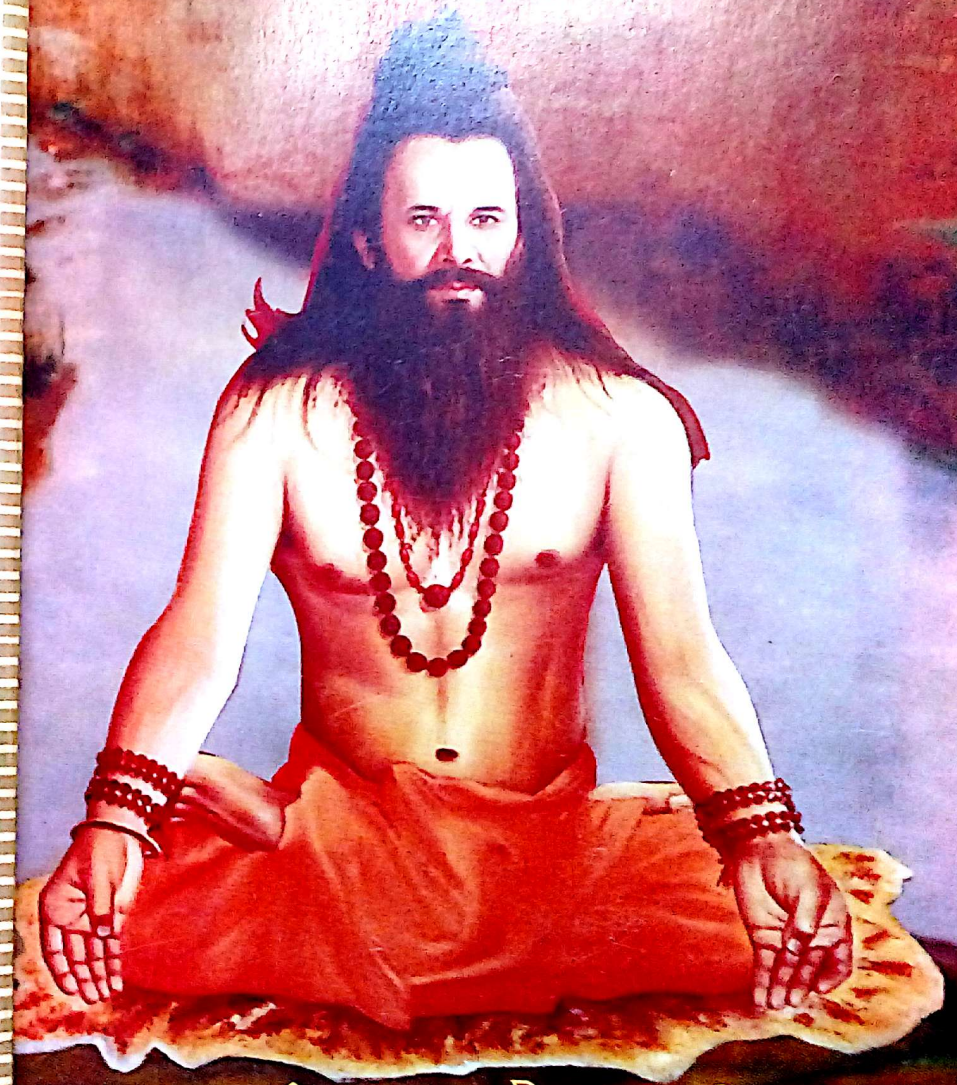
परमहंस सद्गुरुदेव स्वामी

निखिलेश्वरानन्द जी

|| श्री गुरुचरण कमलभ्यो नमः ||

गुरु साधनाएं
एवं
टोटके

आशीर्वाद

डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली

(परमहंस सद्गुरु स्वामी श्री निखिलेश्वरानन्दजी)

मूल्य: १२/-

श्री गुरुचरण कमलेभ्यो नमः

दो शब्द

साधना पथ पर अग्रेसर होना एक शिष्य का प्रथम कर्तव्य है। क्योंकी इस पथ पर चल कर हि वह अपने गुरु को प्रसन्न करने में सफल हो पाता है। और जब शिष्य पर गुरु प्रसन्न होते है, तो शिष्य के लिये संसार में कुछ भी अप्राप्य नहि होता। वह साधना पथ पर और तीव्र गति से आगे बढते हुये सिध्दाश्रम प्रवेश का अधिकारी बन, उसमें प्रवेश पाता है। और जहाँ साधना पथ पर अग्रसर होना प्रथम कर्तव्य है, वहाँ पर सिद्धाश्रम प्रवेश प्राप्त करना शिष्य का ध्येय होता है। जहाँ पर पोहोचने हेतु, वहाँ की पवित्र मटि मस्तक पर लगाने की इच्छा और वहाँ पर व्याप्त उस दिव्य आनंद को प्राप्त करना हर शिष्य साधक तो क्या देवी-देवतायें और श्रेष्ठ संन्यासी भी लालायित रहते है।

इसी दिव्य और श्रेष्ठतम क्रिया की श्रृंखला को आगे बढाते हुये, यह पुस्तक साधकों के लिये प्रेशित किया गया है। यें सभी साधनायें और टोटके परम पूज्यनीय सद्गुरू और हम सबके प्राण प्रिय परमहंस् स्वामी निखिलेश्वरानन्दजी व्दारा हि दि गयी है जो एक शिष्य के लिए वरदान है।

आशा है कि यह संकलित पुस्तक साधकों और शिष्यों के लिए एक पुंजी, एक धरोहर बन पायेगी।

इसी आशा को श्री गुरु चंरणों मे रखते हुये, उनकी कृपा के हम अभिलाषी है।

****

अनुक्रमणिका

सूची पृष्ठ संख्या

I गुरु साधनाएं

1. गुरु और गुरु का महत्व 1
2. दीक्षा 3
3. सद्गुरु दर्शन प्रयोग 8
4. गुरु - पादुका - पूजन - प्रयोग 9
5. शमन - प्रयोग 18
6. तांत्रोक्त गुरु साधना 26
7. गुरु मंत्र साधना 32
8. श्री गुरुदेव निखिलेश्वरानन्द प्रयोग 39
9. गुरु साधना से अखण्ड लक्ष्मी प्राप्ति 43
10. निखिलेश्वरानन्द स्तवन साधना 48
11. श्री गुरुगीता 49
12. यह भी साधना हैं 50

II टोटके एवं लघु साधनाएं

1. नजर उतारने का मंत्र 52
2. वशीकरण प्रयोग 52
3. स्वप्न में प्रश्न का उत्तर जानने का प्रयोग 52
4. किसी भी प्रकार का जहर उतारने का प्रयोग 53
5. रोग एवं बीज मंत्र 53
6. स्वप्नेश्वरी मंत्र 54
7. दुर्गा सिद्ध सम्पुट मंत्र 56
8. अपने प्रत्येक कार्य की सफलता को निश्चित कर सकतहैं, इस प्रयोग से। 57
9. आप स्वयं रोगों को समाप्त कर सकते हैं इस प्रकार से 58
10. अपने विरोधियों को आप यूं स्तब्ध कर दीजिए 58
11. क्या आप धन के आगमन का स्थायी स्रेत चाहते हैं ? 59
12. क्या आप अनावश्यक मोटापे से पीड़ित हैं 59
13. आपका प्रत्येक दिन सफलतापूर्वक व्यतीत हो सकता है 60
14. विना किसी दवा के समाप्त करिये थकान, तनाव को 60
15. यौवन को चिरस्थायी रख सकते हैं 60
16. मन की चंचलता पर काबू पा सकते हैं 61
17. अपने आपको असहाय मत समझिये 61
18. *आप अपनी दिनचर्या में इसे भी महत्व दें* 62
19. अपने जीवन को खुशगवार वनाइए 62
20. क्या एकाकीपन आपके जीवन में बढ़ने लगा हैं ? 63
21. क्या आप जिस कार्य को कर रहे हैं, उसमें हतोत्साहित हो रहे है ? 64
22. आप अपनी शारीरिक क्षमताओं को द्विगुणित करिए। 64
23. लक्ष्मी प्राप्ति मंत्र 65
24. पीठ के रोगों से छुटकारा पाइए 65
25. क्या आप पैरों के दर्द से चलने में स्वयं को असमर्थ महसूस करते हैं ? 66
26. कार्य में निश्चित सफलता 67
27. वीमारी मिटाने का प्रयोग 67
28. व्यापार वढ़ोत्तरी का प्रयोग 67
29. धन लाभ 68
30. विवाह प्रयोग 68
31. घर की कलह मिटाने का प्रयोग 68
32. शत्रु पर विजय प्राप्त करने का प्रयोग 69
33. बच्चों के जीवन में दुर्घटना, एक्सीडेन्ट टालने का प्रयोग 69
34. स्वप्न में किसी प्रश्न का उत्तर जानने का प्रयोग 69
35. सफलता प्राप्त करने का प्रयोग 70

36. कार्य सिद्धि के लिए 70
37. यात्रा की सिद्धि के लिए 70
38. कर्जा वसूल करने का प्रयोग 71
39. शीघ्र विवाह प्रयोग 71
40. परीक्षा में सफलता प्राप्त करने का प्रयोग 72
41. गमन रक्षा 72
42. रोग नाश के लिए 73
43. संकट निवारण प्रयोग 74
44. निश्चित कामना पूर्ति प्रयोग 75
45. पुत्र प्राप्ति प्रयोग 76
46. सर्व सिद्धि प्रयोग 77
47. पति वशीकरण प्रयोग 78
48. क्या शत्रु आप पर हावी होते जा रहे हैं ? 79
49. सिद्धि गुटिका 79
50. हमजाद् अपने-आप में अद्वितीय है 79
51. दु:स्वप्न हरण यंत्र 80
52. क्या आपका शिशु सदैव रोता रहता है ? 80
53. हनुमन्मन्त्र चमत्कारानुष्ठान 81
54. रोगमुक्त रूद्र प्रयोग 82
55. रोग नाशक प्रयोग 83
56. विवाह का इच्छाधारी प्रयोग 84
57. बाल रोग निवारक प्रयोग 85
58. सर्वकामना सिध्दि प्रयोग 85
59. घर में चोरी ना होने का मंत्र 86

गुरु साधनाएं

गुरु और गुरु का महत्व

एक दीये को जलने के लिये दूसरे जलते हुए दोये की आवश्यकता पड़ती है या कोई अन्य ज्योति की। इस तरह एक आत्मिक ज्ञान प्राप्त व्यक्ति ही दूसरे को आत्मिक ज्ञान प्रदान कर सकता है। एक शिष्य के लिये गुरु की विशेष आवश्यकता है। यदि शिष्य आंखे बंद कर आध्यात्मिक मार्ग पर अकेला चलता है तो वह अपनी मंजिल तक नहीं पहुंच सकता है, वह अपने मार्ग में कही भी भटक सकता है क्योंकि ज्ञान प्राप्ति का मार्ग कठिन होता है और स्थान-स्थान पर आकर्षण, मोह, विरोधाभास आते हैं। गुरु एक मार्ग दर्शक की भूमिका निभाते हैं जो आपके अशान्त मन को शांत करते हैं और मार्ग में आनेवाली बाधाओं में भी आपको हिम्मत और साहस तथा शक्ति प्रदान करते रहते हैं।

मनुष्य का अहंकारी स्वाभाव ऐसा है कि वह अपनी गलतियों को कभी भी देख नहीं पाता है अथवा उन्हें स्वीकार नहीं कर पाता गुरु ही शिष्य के जीवन की उन गलतियों और अहंकार को बताते हैं जो उसे गलत दिशा में ले जा रहे हैं। इसलिये आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्ति के इच्छुक शिष्य के लिये गुरु अति आवश्यक है।

भगवान की कृपा गुरु के माध्यम से ही प्राप्त होती है। एक मनुष्य, दूसरे मनुष्य से ही कुछ सीख सकता है और इसी कारण भगवान एक माध्यम बनाते है और वह माध्यम गुरु होता है। गुरु वह व्यक्तित्व है जिसका दिव्य शक्तियों से भी सम्बन्ध है और मनुष्य से भी सम्बन्ध है। इन दोनों को आपस में जोड़ने का कार्य गुरु की शिक्षा है। **गुरु ही वह व्यक्तित्व है जो अज्ञान के अंधकार से शिष्य को पार ले जाकर जीवन में ज्ञान का प्रकाश देता है। गुरु ही वह व्यक्ति है जो जीवन की बाधाओं के सम्बन्ध में**

शिष्य को सचेत करता रहता है । गुरु वह व्यक्तित्व है जो शिष्य में आत्म उत्साह प्रादान करता है । **क्रिया** के साथ जाग्रति साधना कहलाती है और **अभ्यास** अपने आप को दृढ़ निश्चय के साथ उच्च स्थिति में ले जाने की क्रिया है, जिससे वह अपना आत्म ज्ञान प्राप्त कर सकें । गुरु व्यक्ति की शाक्तियों को एक श्रृंखला वध्द रुप देता है जिससे बिखरी हुई शक्तियां एक धारा में श्रेष्ठता के साथ वह सकें।

गुरुजी ने कंहा है कि "मैने अपने जीवन में हजारों साधकों को देखा है और कई विशेष प्रकार के अनुभव हुए हैं । प्रथम श्रेणी के शिष्य वे होते हैं जो कि गुरु को एक जादू का डिब्बा समझ लेते हैं और यह सोचते हैं कि गुरु एक चमत्कारी पुरुष है । दूसरे प्रकार के शिष्य गुरु को महायोगी, महाआत्मा और मृत्यु - अमृत्यु से परे समझते हैं । तीसरे प्रकार के शिष्य गुरु की चित्र रुप से पूजा करते है और उसी भाव में खो जाते हैं, लेकिन मैं इन में से किसी एक पक्ष से विश्वास नहीं करता हूं ।

गुरु वह व्यक्ति नहीं है जिनके ऊपर आप अपनी सारी कठिनाइयों, समस्याओं का बोझ डाल सको । गुरु वह व्यक्ति है जो आपको जीवन जीने का रचनात्मक, सुयोग्य और, प्रभावकारी मार्ग दिखलाता है जिससे कि आपमें स्वयं को जानने की प्रक्रिया प्रारम्भ हो सकें । आप क्या कर सकते हो ? और क्या नहीं कर सकते हो? किस प्रकार से कर सकते हो ? और क्या नहीं करना है ? जीवन में सही क्रिया क्या है ? जीवन में गलत क्रिया क्या है ? दूसरों के भावों, विचारों को किस प्रकार समझा जा सकता है ? किस प्रकार से हम अपना अभिमान और इच्छाएं दूसरों पर नहीं लादें ? इन सवके सम्बन्ध में जानकारी देकर योग्य व्यक्ति बनाना ही गुरु के उपदेश एवं ज्ञान का स्वरुप है ।

****

दीक्षा

दीक्षा का तात्पर्य, मूल स्वरूप क्या है, शिष्य को कब गुरु से दीक्षा ग्रहण करनी चाहिए, किन नियमों का पालन होना विशेष आवश्यक है, दीक्षा के क्या भेद हैं, - ये प्रश्न निश्चय ही हर साधक के मन में बार-बार मंथन करते हैं, इन्हीं प्रश्नों का पूर्ण विवेचन पूज्य गुरुदेव से प्राप्त अमृत वचनों के आधार पर -

साधक और शिष्य का भेद निश्चय ही गहरा है, साधक के लिए कोई बन्धन नहीं है, वह जो कार्य करता है, एक प्रकार से अंधेरे मे हाथ-पांव मारने के समान ही है, क्योंकि उसके पास कोई प्रकाश स्रोत नहीं है, इसलिए शिष्य वही है जो सदाचारी हो, कर्म, मन, वाणी और धन से गुरु-सेवा करने के लिए इच्छुक हो, गुरु की आज्ञा का पालन करने वाला हो, गुरु के सामने अपने धन, विद्या, जाति का अभिमान न करने वाला हो, गुरु-भक्ति में और गुरु-आज्ञा मे अपना सब कुछ सौंप देने को हर समय तत्पर रहता हो, वही तो शिष्य है ।

दीक्षा क्या है ?

दीक्षा गुरु की कृपा और शिष्य की श्रद्धा का संगम है, गुरु का आत्मदान और शिष्य का आत्म समर्पण ही दीक्षा है, दीक्षा का तात्पर्य गुरु द्वारा ज्ञान, शक्ति और सिद्धि का दान, और शिष्य द्वारा अज्ञान, पाप और दरिद्रता का नाश, शरीर कितना ही शुद्ध हो, यह आवश्यक नहीं कि मन भी उसी अनुपात में जागृत हो, दीक्षा का तात्पर्य मन की जागृति है ।

दीक्षा गुरु की ओर से आत्मदान, शक्तिपात है जो शिष्य के भीतर सुप्त शक्तियों को जागृत करने की प्रक्रिया है, साधना और सिद्धिया दीक्षा के माध्यम से ही शिष्य के भीतर चेतना की मूल शक्ति जागृत करती है, इसी कारण शिष्य वह स्थान प्राप्त कर सकता है, जो उसे साधना के द्वारा होना चाहिए।

दीक्षा द्वारा गुरु शिष्य को अपने संरक्षण में लेकर उसके लिए क्या उचित है, इसका निर्णय करता है। उसके पूर्व जन्म की साधनाएं, संस्कार, दोष, तथा वर्तमान जीवन के दोष, बाधाएं जानकर उस केलिए उचित मार्ग स्पष्ट करता है।

दीक्षा के भेद

दीक्षा का तात्पर्य केवल श्रीगुरु के सामने बैठकर कोई मंत्र लेना ही नहीं है, यह तो एक क्रमबद्ध श्रृंखला है, सिद्धि तक पहूँचने की पहली सीढ़ी है, जिससे आगे की सीढ़िया, मार्ग निरन्तर मिलता ही रहता है, दीक्षा, शिव और शक्ति का मिलन कर शिष्य में प्रवाहित करना है।

मूल रूप मे दीक्षा के तीन भेद हैं - १ शाक्त दीक्षा, २ - शांभवी दीक्षा, ३ - मांत्री दीक्षा। आगे चल कर मंत्र जिरो आणवी दीक्षा भी कहा गया है, और अधिक भेद हो जाते है -

१ - शाक्त दीक्षा

शाक्त दीक्षा में शिष्य अपनी ओर से कुछ भी नही करता, गुरु शिष्य के अन्तरदेह मे प्रवेश कर कुण्डलिनी शक्ति को जागृत कर अपनी शक्ति से ही शिव और शक्ति का मिलन करा देते है, यह दीक्षा तो गुरुदेव अपने परम शिष्यों को ही प्रदान करते है, जो शिष्य साधना के पथ वर बहुत आगे बढ़ गया हो।

२ - शांभवी दीक्षा

इसमें गुरु एवं शिष्य आमने-सामने वैठते है, गुरु अपनी प्रसन्न दृष्टि से शिष्य को स्पर्श करते हुए उसके भीतर शिव और शक्ति के चरण स्थित कर देते है, शिष्य समाधिस्थ रहते हुए समाधिस्थ हो जाता है और उसकी कुण्डलिनी जागृत हो जाती है, यह दीक्षा श्रीगुरु अपने शिष्य के स्तर को परख कर ही प्रदान करते है।

३ - मांत्री (आणवी) दीक्षा

मांत्री दीक्षा ही सामान्य साधक के लिए आवश्यक दीक्षा है, जिसमें गुरुदेव शिष्य को मंत्र प्रदान करते हैं, शिष्य को अनुष्ठान पूजन इत्यादि समपन्न करना होता है, इस दीक्षा से ही साधक को शक्तिपात की पात्रता प्रारम्भ होती है और उसके द्वारा किये गये मंत्र जप, अनुष्ठान उसे उचित सिद्धि दिलाते है, गुरुदेव अपने भावनात्मक शिष्य को प्रथम रूप में यही दीक्षा दे कर उसकी साधना का श्रीगणेश करते है, और यह आवश्यक भी है।

आणवीय दीक्षा का विस्तार बहुत अधिक है, और इस दीक्षा के दस भेद है, जिन्हें समझना प्रत्येक शिष्य के लिए आवश्यक है, यह दस भेद है -

१-स्मार्ती, २-मानसी, ३-योगी, ४-चाक्षुणी, ५-स्पार्शीका, ६-वाचिकी, ७-मांत्रिकी, ८-होत्री, ९-शास्त्री, १०-आभिषेचिका।

१ - स्मार्ती दीक्षा

जब गुरु और शिष्य भिन्न-भिन्न स्थान पर स्थित हो, तो यह दीक्षा सम्पन्न की जाती है, निश्चित समय पर शिष्य स्नान कर अपने स्थान पर बैठता है और गुरुदेव अपने स्थान पर शिष्य का स्मरण

करते हुए उसके दोषों का विश्लेषण करते हुए उन को भस्म कर, सिद्धि के मार्ग पर उसे स्थित कर देते हैं ।

२ - मानसी दीक्षा

इसमें गुरु और शिष्य एक ही स्थान पर स्थित रहते है और स्मार्ती दीक्षा के अनुरुप हो श्रीगुरु शिष्य का स्मरण करते हुए उसे दीक्षा प्रदान करते हुए उसे शिव और शक्ति तत्व से मानसिक रूप से परिचित कराते हैं ।

३ - योगी दीक्षा

इस दीक्षा में गुरु योग पद्धति से शिष्य के शरीर में प्रवेश कर अपना योग तत्व प्रदान कर देते हैं, और उसे परम तत्व योग का मार्ग देते हैं, यह अत्यंत उच्चकोटि की दीक्षा केवल योगियों के लिए ही है।

४ - चाक्षुबी दीक्षा

इसमे श्रीगुरुदेव अपने शिव भाव को जागृत कर करुणामयी दृष्टि से दीक्षा समय शिष्य को देखते हुए उसके दोषों को भस्मीभूत करते हैं ।

५ - स्पार्शिकी दीक्षा

इसमे श्रीगुरुदेव अपने हस्त पर शिव मंडल बना कर, शिव स्थित कर, शिव स्वरूप जागृत कर, इस शिव हस्त का स्पर्श कर शक्ति जागृत करते हैं ।

६ - वाचिकी दीक्षा

इस दीक्षा में गुरुदेव सर्व प्रथम अपने गुरु का ध्यान कर, अपने भीतर अपने गुरु को स्थित कर, शिष्य को विधि-विधान सहित मंत्रदान प्रदान करते हैं ।

७ - मांत्रिकी दीक्षा

इस दीक्षा में गुरुदेव स्वयं न्यास इत्यादि विशेष मंत्र क्रियाएं सम्पन्न कर मन्त्रात्मक होकर अपने शरीर से शिष्य के शरीर में मंत्र का संक्रमण करते है मंत्र का पालन शिष्य के लिए आवश्यक होता

८ - होत्री दीक्षा

इसमें यज्ञ स्थान पर बैठ कर अग्नि प्रज्ज्वलित कर यज्ञ आहुति देते हुए शिष्य को दीक्षा प्रदान की जाती है ।

९ - शास्त्री दीक्षा

इसमे किसी प्रकार की सामग्री की आवश्यकता नहीं होती श्रीगुरु अपने शिष्य की भक्ति भावना, सेवा, समर्पण, योग्यता को देखते हुए, शिष्य को शास्त्रीय दान प्रदान करते हुए दीक्षा देते हैं ।

१० - अभिषेचिका दीक्षा

इसमें सर्वप्रथम गुरुदेव एक घट पात्र में जल भरकर शिव और शक्ति की पूजा करते है, और उस जल से शिष्य के सिर पर अभिषेक सम्पन्न करते है यह भी एक उच्चकोटि की विशिष्ट दीक्षा है ।

शास्त्रों में तो आगे दीक्षा के संबंध में और कई वर्णन, भेद आते है लेकिन मूल स्वरूप इन्हीं दीक्षाओं से निकला है, तन्त्र शास्त्रों में दीक्षा स्तर के संबंध में भी लिखा है, जो गुरुदेव अपने शिष्य को उसकी साधना स्तर के अनुरूप प्रदान करते हैं ।

दीक्षा को केवल एक प्रथा मानना उचित नहीं है इसे तो मर्यादा पालन का मार्ग मानते हुए अपने जीवन को, एक ऐसा मोड़ देना है, जिसमें दोष और दुःखों का मार्जन है, पंच-शक्तियों का विकास है, कुण्डलिनी जागरण प्रक्रिया है, दिव्य भाव जागृत करना है ।

****

सद्गुरु दर्शन प्रयोग

सामग्री :- सद्गुरु की मूर्ति या चित्र, शुद्ध घृत का दीपक।

माला :- स्फटिक माला।

समय :- दिन या रात का कोई भी समय।

आसन :- सफेद सूती आसन।

दिशा :- उत्तर दिशा॥

जप संख्या : एक लाख।

अवधि :- जो भी सम्भव हो।

मंत्र :- ॥ ॐ ह्रीं गुरौ प्रसीद ह्रीं ॐ ॥

प्रयोग :- किसी भी गुरुवार को यह प्रयोग प्रारम्भ करना चाहिए प्रातः काल स्नान कर स्वच्छ धोती पहन कर सामने गुरुदेव का चित्र रख और विधि - विधान से पूजा कर मंत्र जप करे, तो मंत्र जप पूरा होने पर गुरु प्रसन्न होते है और वह जिस प्रकार से चाहता है, उस प्रकार से उसकी इच्छा पूरी हो जाती है।

यदि किसी को अपना गुरु नहीं मिला हो, तो इस प्रयोग से गुरु मिल जाते है, यदि गुरु अप्रसन्न हो तो प्रसन्न हो जाते है और शिष्य अपने गुरु से जो विद्या सीखना चाहता है, वह विद्या गुरु स्वतः ही देने को तैयार हो जाते हैं।

****

गुरु - पादुका - पूजन - प्रयोग

शास्त्रों के अनुसार मार्गशीर्ष शुक्ल २ को "गुरुत्व दिवस" या "गुरु पादुका दिवस" मनाया जाता है।

एक साधक या शिष्य के जीवन में 'गुरु पादुका दिवस' का सर्वाधिक महत्व है, और वह पूर्ण श्रद्धा, भावना, एवं चिन्तन के साथ "गुरु पादुका दिवस" को सपरिवार सम्पन्न करता है।

गुरु पादुका

गुरु की पादुका साक्षात् गुरुमय होती है, क्योंकि -

पृथिव्या यानि तीर्थानि तानि तीर्थानि सागरे।
सागरे सर्व तीर्थानां गुरुस्य दक्षिणे पदे॥

गुरु चरण जल से स्नान कर समस्त तीर्थों के स्नान का फल प्राप्त होता है, इसलिए गुरु के चरणों में धारण की हुई खड़ाऊ या पादुका स्वयं गुरु का साक्षात स्वरुप बन जाती है। गुरु पादुका की उपस्थिति साक्षात् गुरु की उपस्थिति ही मानी गई है। गुरु पादुका स्तवन मूल रूप में गुरु स्तवन ही है, इसीलिए पूरे भारत वर्ष में जितना महत्व गुरु पूर्णिमा का है, उससे भी ज्यादा महत्व "गुरु पादुका दिवस" का है।

भगवान शिव ने पार्वती को समझाते हुए कहा है, कि मात्र गुरु पादुका पूजन करने से साधक की सोलह कलाएं स्वतः विकसित होने लग जाती है, ये सोलह कलाएं निम्न प्रकार से कही गयी है - १ मूलाधार, २ - स्वाधिष्ठान, ३ - मणिपुर, ४ - अनाहत, ५ - विशुद्ध, ६ - आज्ञा, ७ - बिन्दु, ८ - कला पद, ९ - निर्वाधिका, १० - अर्धचन्द्र, ११ - नाद, १२ - नादान्त, १३ - शत्ति, १४ - व्यापिका, १५ - समना, ११६ - उन्मना।

इन सोलह कलाओं का विकास और कुण्ड़लिनी जागरण होकर जब कुण्ड़लिनी उर्ध्वगामी होती है, तब स्वतः साधक की 'खेचरी मुद्रा' प्रारम्भ हो जाती है और ऐसा होने पर वह शिवात्मक गुरु शिष्य से संबोधित हो जाती है ।

शिष्य को 'गुरु पादुका' प्राप्त कर अपने पूजा स्थान में सम्मान पूर्वक स्थापित कर देना चाहिए, और यह अहसास करना चाहिए कि यह खड़ाऊ या ये पादुकाएं साक्षात ब्रह्ममय गुरु ही सशरीर उपस्थित है ।

साधक ''गुरु पादुका दिवस'' के दिन पूर्ण श्रद्धा के साथ स्नान कर शुद्ध श्वेत वस्त्र धारण करे, और उत्तर दिशा की ओर आसन बिछा कर अपनी पत्नी के साथ या स्वयं बैठें, सामने श्रेष्ठ लकड़ी की तख्ते पर पीला वस्त्र बिछा कर उस पर गुरु पादुका स्थापित करें, और फिर अपने सामने पूजन सामग्री रख कर गुरु पादुका पूजन कार्य सम्पन्न करें ।

पादुका चिन्तन

साधक या शिष्य अपने दोनों हाथ खड़ाऊओं पर रखता हुआ निम्न प्रकार से चिन्तन-उच्चारणा करे -

ॐ गुरुभ्यो नमः ॐ परम गुरुभ्यो नमः ॐ परात्पर गुरुभ्यो नमः ॐ परमेष्ठि गुरुभ्यो नमः ॐ गणपतये नमः ॐ मूल प्रकृत्ये नमः ॐ मण्डूकाय नमः ॐ मूलाधारये नमः ॐ कालाग्नि रुद्राय नमः ॐ कूर्माय नमः ॐ आधार शक्ये नमः ॐ आनन्दाय नमः ॐ अनन्ताय नमः ॐ पृथ्विव्यै नमः ॐ सुधार्णवाय नमः ॐ मणिद्विपाय नमः ॐ कल्पवृक्षाय नमः ॐ चिन्तामणि गृहाय नमः ॐ हेमपीठाय नमः

इसके बाद बाई तरफ चावल की ढ़ेरी बना कर उस पर एक गोल सुपारी रख कर उसे भैरव मान कर उसकी संक्षिप्त पूजा करें, जिससे कि किसी प्रकार का कोई विघ्न उपस्थित न हो, पूजन के बाद भैरव के सामने हाथ जोड़कर उच्चारण करें -

तीक्ष्णदंष्ट्र महाकाय कल्पान्ते दहनोपम् ।
भैरवाय नमस्तुभ्यं अनुज्ञा दातुमर्हसि ।।

इसके बाद दिशा बंधन करें, फिर आसन पूजन करें -

आसन पूजन

इसके बाद अपने आसन को हटा कर उसके नीचे कुंकुम से त्रिकोण बनावे, और उस पर पुनः आसन बिछा दें, फिर आसन पर जल छिड़कते हुए निम्न उच्चारण करें -

ॐ क्षेत्रपालाय नमः । ॐ पृथ्वीत्यासन-मंत्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः। सुतलं छन्दः । कूर्मो देवता । आसने विनियोगः ।

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता ।

त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ।।

इसके बाद जो आसन बिछा हुआ है, उस पर निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए आसन पर केसर की पांच बिन्दिया लगावे जिससे कि आसन सिद्धि हो सके ।

ॐ पृथ्विव्यै नमः ॐ अनन्ताय नमः ॐ कूर्माय नमः ॐ विमलाय नमः ॐ योगपीठाय नमः

इसके बाद खड़ाऊ के सामने पांच चावल की ढ़ेरियां बनावें, और उस पर एक एक गोल सुपारी रख कर केसर की बिन्दी लगावे तथा उच्चारण करें -

ॐ गुं गुरुभ्यो नमः ॐ पं परम गुरुभ्यो नमः ॐ पं परात्पर गुरुभ्यो नमः ॐ पं परमेष्ठि गुरुभ्यो नमः ॐ पं परापर गुरुभ्यो नमः

शरीर गुरु स्थापन प्रयोग

इसके बाद दहिने हाथ से संबंधित अंगों को स्पर्श करते हुए गुरु को अपने पूर्ण शरीर में समाहित करें -

ॐ कूर्माय नमः ॐ वैराग्याय नमः ॐ आधार शक्तये नमः ॐ अनैश्वर्याय नमः ॐ पृथिव्यै नमः ॐ अनन्ताय नमः ॐ धर्माय नमः ॐ सर्वतत्वात्मकाय नमः ॐ ज्ञानाय नमः ॐ आनन्दकन्दाय नमः ॐ सवित्रालाय नमः ॐ ऐश्वर्याय नमः ॐ विकारमयकेशरेभ्यो नमः ॐ प्रकृतमयपत्रेभ्यो नमः ॐ पंचाशर्णबीजाढ्यकर्णिकायै नमः

इस प्रकार अपने शरीर में गुरु को स्थपित कर अपनें शरीर की संक्षिप्त पूजा करें, सिर पर जल छिड़के सिर के मध्य में केसर की बिन्दी लगावे, हृदय पर केसर का लेप करें, और प्रसन्नता अनुभव करें कि मेरे शरीर कें रोम रोम में पूज्य गुरुदेव स्थापित हुए है, जिससे कि मेरी कुण्ड़लिनी स्वतः जागृत होने लगी है ।

इसके बाद खड़ाउ के दाहिनी ओर एक दूसरे लकड़ी के बाजोट पर कलश स्थापित करें, ओर कलश के चारो ओर चारो दिशाओं की ओर केसर की बिन्दी लगाते हुए निम्न मंत्र का उच्चारण करे ।

ॐ पूर्वे ऋग्वेदाय नमः ॐ उत्तरे यजुर्वेदाय नमः ॐ पश्चिमे अथर्व वेदाय नमः ॐ दक्षिणे साम वेदाय नमः

इस प्रकार कलश में चारो वेदों की स्थापना करे और संक्षिप्त पूजर करे

कलश के पास में शंख स्थापित करे, और उसका पूजन करे, शंख के पास ही घण्टा स्थापित करे, और उसका भी पूजन करते हुए निम्न उच्चारण करे -

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम् ।
घण्टानादं प्रकुर्वीत पश्चाद् घण्टा प्रपूजयेत ।।

फिर कलश के आगे बारह चावल ढेरियां बनावे और उस पर एक एक सुपारी रख कर निम्न देवताओं की स्थापना करें ।

१-ॐ कालाग्नि रुद्राय नमः २-ॐ कूर्मायै नमः ३-ॐ पृथिव्यै नमः ४-ॐ धर्माय नमः ५-ॐ ज्ञानाय नमः ६-ॐ वैराग्याय नमः ७-ॐ ऐश्वर्याय नमः ८-ॐ राग्याय नमः ९-ॐ अनन्ताय नमः १०-ॐ सर्वतत्वात्मकाय नमः ११-ॐ आनन्दमयकन्दाय नमः १२-ॐ प्रकृतिमय पत्रेभ्यो नमः

खड़ाउ - विनियोग

ॐ अस्य श्री पादुका मन्त्रस्य दक्षिणामूर्ति ऋषिः गायत्रीछन्दः श्री गुरु देवता प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

इसके बाद खड़ाउ में गुरु प्राण प्रतिष्ठा करते हुए निम्न मंत्र का उच्चारण करें ।

पादुका गुरु मंत्र

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः हंसः शिवः सोहं हंसः स्वरूप निरुपणहेतवे श्री गुरुवे नमः

इसके बाद साधक न्यास करे -

करन्यास

ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॐ ह्रः करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः

हृदयादि न्यास

ॐ ह्रां हृदयाय नमः ॐ ह्रीं सिरसे स्वाहः ॐ ह्रूं कवचाय हुं ॐ ह्रै नेत्रत्रयाय वौषट ॐ ह्रौं शिखायै वषट ॐ ह्रः अस्त्राय फट्

फिर गुरु ध्यान करे ।

महा-रोगे महोत्पाते महा-देवी महा-मये ।
महा-पदि महा-पापे स्मृता रक्षति पादुका ॥

तेनाधीनं स्मृतं ज्ञानं पुण्यं पत्तं च पूजितं ।
जिह्वायां वसंते यस्य श्री परा-पादुका-स्मृतिः ॥

भोग भोगार्थिना ब्रह्म-विष्णवी-पद कांक्षिणाम ।
भक्ति रेव गुरौ देवि "नान्यः पंथा" इति श्रुतिः

इसके बाद २ अन्य पात्रों में परम गुरु और परमेनिष्ठ गुरु की स्थापना करें, स्थापना में पात्र में चावलों की ढ़ेरी बनाकर उस पर सुपारी रख कर उन्हे परम गुरु और परमनिष्ठ गुरु मानकर उपरोक्त प्रकार से ही न्यास करे फिर उनका ध्यान करें ।

परम गुरु ध्यान

गुरु भक्ति-विहीनस्य तपो विद्या कुल व्रतम् ।
सर्व नश्यन्ति तत्रैव भूषण लोक रंजनम् ॥

गुरु भवत्यग्निना सम्यग् दृग्ध्या सर्व-गतिदंसः
श्वपचो पि परैः पूज्यो न विद्वानपि नास्तिकः ॥

परमेष्ठि गुरु ध्यान

गुरुः पिता गुरुर्माता गुरुर्देवो गुरुर्गति ।
शिवे रुष्टो गुरुस्त्राता गुरौ रुष्टे न कश्चन ॥

पादुका लय पूजन

इसके बाद साधक पादुका लय पूजन करें, जो सामने दोनों पादुकाएं स्थापित की है, दोनों पादुकाओं पर कुंकम से त्रिकोण बनावे, और सूर्य-द्वादस कलाओं में से छः कलाओंकी स्थापना वाम पादुका में तथा छः कलाओं की स्थापना दाहिनी पादुका में स्थापित करें -

वाम पादुका कला स्थापन

१-ॐ तपिन्यै नमः २-ॐ तापिन्यै नमः ३-ॐ ज्वालिन्यै नमः ४-ॐ रुच्यै तमः ५-ॐ सूक्ष्मायै नमः ६-ॐ भोगिन्यै नमः

दाहिनी पादुका कला स्थापन

१-ॐ विश्वायै नमः २-ॐ धूम्रायै नमः ३-ॐ मरीच्यै नमः ४-ॐ बोधिन्यै नमः ५-ॐ धारिण्यै नमः ६-ॐ क्षमायै नमः

इन कलाओं की स्थापना से दोनों पादुकाओं में पूर्ण सूर्य मण्डल स्थापित हो जाता है, इसके बाद दोनों पादुकाओं पर कलश में से जल (अमृत) छिड़कते हुए निम्न सोलह चन्द्र कलाओं की स्थापना करें, जिससे कि इन पादुकाओं में चन्द्र कलाओं के साथ साथ अमृत तत्व का प्रादुर्भाव हो सके ।

१-ॐ अमृतायै नमः २-ॐ मानदायै नमः ३-ॐ पूषायै नमः ४-ॐ तुष्टयै नमः ५-ॐ पुष्टयै नमः ६-ॐ रत्यै नमः ७-ॐ धृत्यै नमः ८-ॐ शशिन्यै नमः ९-ॐ चण्डिकायै नमः १०-ॐ काल्यै नमः ११-ॐ ज्योत्स्नायै नमः १२-ॐ श्रियै नमः १३-ॐ प्रीत्यै नमः १४-ॐ अंगदायै नमः १५-ॐ पूर्णायै नमः १६-ॐ पूर्णामृतायै नमः

इस प्रकार करने के बाद बांये हाथ में केसर से चावल रंग कर दाहिने हाथ से थोडे थोडे चावल दोनों पादुकाओं पर डालते हुए निम्न उच्चारण करें -

१-मध्ये श्री कृष्ण आवाहयामि स्थापयामि २-दक्षिणे वासुदेवं आवाहयामि स्थापयामि ३-पश्चिमे अनिरुद्धाय नमः आवाहयामि स्थापयामि ४-पूर्वे वैशंपायनाय नमः आवाहयामि स्थापयामि ५-उत्तरे जैमिन्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि

इसके बाद जिस पात्र में खड़ाउ हो वह पात्र अपने सिर पर रख कर दोनों हाथों में लेकर साधक निम्न प्रकार से उच्चारण करें -

१-ॐ श्री शंकराचार्याय नमः आवाहयामि स्थापयामि २-ॐ विश्वरूपाचार्याय नमः आवाहयामि स्थापयामि ३-ॐ पद्मापादाचार्याय नमः आवाहयामि स्थापयामि ४-ॐ हस्तामलकाचार्याय नमः आवाहयामि स्थापयामि ५-ॐ त्रोटकाचार्याय नमः आवाहयामि स्थापयामि ६-ॐ दत्तात्रेयाय नमः आवाहयामि स्थापयामि ७-ॐ जीवन मुक्ताय नमः आवाहयामि स्थापयामि ८-ॐ नारदं वामदेवं कपिलं आवाहयामि स्थापयामि ।

इसके बाद खड़ाउ पर पुष्प समर्पित करते हुए निम्न उच्चारण करे -

१-ॐ गुरवे नमः आवाहयामि स्थापयामि २-ॐ परम गुरवे नमः आवाहयामि स्थापयामि ३-ॐ परात्पर गुरवे नमः आवाहयामि स्थापयामि ४-ॐ परमेष्ठि गुरवे नमः आवाहयामि स्थापयामि ५-ॐ परम गुरवे नमः आवाहायामि स्थापयामि

इसके बाद दोनों हाथों मे पुष्प, अक्षंत, कुंकुम, पुष्प माला लेकर पादुका के ऊपर समर्पित करते हुए उच्चारण करें -

१-ॐ सर्वशास्त्रार्थतत्वज्ञं निखिलेश्वरानन्दाय आवाहयामि स्थापयामि २-ॐ परमानन्दरुपेण स्वामी सच्चिदानंद आवाहयामि स्थापयामि ३-ॐ ब्रह्मण्य रूपेण वेदव्यासाय आवाहयामि स्थापयामि ४-ॐ पूर्णत्व प्रदाय चतुर्मखु ब्रह्मा आवाहयामि स्थापयामि ।

सूक्ष्म गुरुतत्व मंत्र

सर्वथा गुप्त और दुर्लभ द्वादशार्ण सरसी रुह के रूप में जो गुरु मंत्र के बारह वर्ण है, वे निम्न है जो कि ब्रह्माण्ड के गुरुओं का प्रतिनिधित्व करते है साधक को स्फटिक माला से चार माला निम्न ब्रह्माण्ड गुरु मंत्र की जपनी जाहिए ।

॥ स ह फ्रें ह स क्ष म ल व र यू म् ॥

इसमें प्रथम द्वादश वर्ण है अंतिम म् "वाग्भव" बीज है, इस प्रकार यह द्वादश वर्ण युक्त मंत्र तुरन्त कुण्ड़लिनी जागरण में पूर्ण रूप से सहायक है । यदि साधक पादुका पूजन कर उपरोक्त गुरु मंत्र (ब्रह्माण्ड गुरु मंत्र) का जप करता है, तो निश्चिय हीं उसकी कुण्डलिनी और सहस्त्रार जागृत होता है, यह प्रमाणिक वचन है ।

इसके बाद 'गुरु पादुका पंचक' का मधुरता के साथ पाठ करें।

****

पूर्व जन्म कृत दोष निवारणार्थ

शमन - प्रयोग

साधको को कई बार प्रयत्न करने पर भी साधनाओं में सफलता नहीं मिल पाती, इसके लिए पांच चिन्तन स्पष्ट है - १ - दीक्षा यदि नहीं हुई २ - दीक्षा के उपरान्त भी यदि गुरु के प्रति आलोचना, भ्रम और संशय है, ३ - जो साधना काल में अपने इष्ट और गुरु में अन्तर समझता है, या पूर्ण हृदय से गुरु-चिन्तन, गुरु पूजा अथवा गुरु मंत्र जाप नहीं कर पाता है, तब भी साधना में सफलता नहीं मिल पाती । ४ - गुरु के बताये हुए कार्यों में शिथिलता बरतना या आज्ञा पालन में न्यूनता रखना ५ - और पिछले जीवन के अथवा इस जीवन के पाप, दोष अधिक हो ।

उपरोक्त कारणों में से प्रथम चार बाधाओं का गुरु की सेवा करने से उनके सान्निध्य में रहने से अथवा उनकी आज्ञा का पालन करने से और निरन्तर गुरु मंत्र जप करने से शमन हो जाता है पांचवे प्रकार के दोष को दूर करने के लिए यह प्रयोग अपने आप में अत्यन्त सशक्त, महत्वपूर्ण और दुर्लभ है ।

यह प्रयोग गुरुवार को किया जाता है, और आठ गुरुवार तक यह प्रयोग सम्पन्न होता है । गुरुवार के दिन साधक-स्नान कर पीली धोती धारण कर पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाय, सामने पूज्य गुरुदेव का अत्यन्त आकर्षक और सुन्दर चित्र स्थापित करे, तथा उनकी भक्तिभाव से पूजा करे । उन्हें नैवैद्य समर्पित करे, सुगन्धित अगरबत्ती प्रजवलित करे, घी का दीपक लगावें, और स्वयं ''गुरु रुद्राक्ष'' माला धारण कर पूर्ण शुद्ध सात्विक भाव से निम्न प्रयोग सम्पन्न करे -

प्रयोग विधि

साधक तीन बार दाहिने हाथ में जल लेकर पी ले और उसके बाद हाथ धो कर प्राणायाम करे और फिर दाहिने हाथ में जल कुंकुम, पुष्प लेकर संकल्प करे ।

ॐ विष्णु र्विष्णु देशकालौ संकीर्त्य अमुक गोत्रस्य अमुक शर्माऽहम् ममोपरि इह जन्म गत जन्म स्वकृत परकृत-कारित क्रियमाण कारयिष्यमाण-भूत-प्रेत पिशाचादि मंत्र-तंत्र-यंत्र त्रोटकादिजन्यसकलदोष बाधा निवृत्ति पूर्वक पूर्ण सिद्धि दीर्घायुरारोग्यैश्वर्यादि-प्राप्तर्थ शमन साधना प्रयोगमहंच करिष्ये ।

ऐसा कह कर हाथ में लिया हुआ जल सामने रखे हुए पात्र में छोड़ दें और गले में पहनी हुई रुद्राक्ष माला से गुरु मंत्र जप करे-

ॐ परमतत्वाय नरायणाय गुरुभ्यो नमः

एक माला मंत्र जप करने के बाद उस रुद्राक्ष माला को गले में धारण कर ले और पूर्व दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाय, सामने गुरु चित्र लकड़ी के बाजोट पर स्थापित करे, उस पर शुद्ध घृत का दीपक लगावे, और हाथ में जल लेकर संकल्प करे ।

१. ॐ यो में पूर्ववत इह गत पाप्मा पापकेनेह कर्मणा साक्षी भूतं निखिलेश्वरानन्द मम समस्त दोष पाप भंजयतु भंजयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु कलिं तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम (अपना नाम उच्चारण करे) गुरु शान्तिः स्वस्त्ययनंचास्तु ।

इसके बाद पूर्व की ओर मुंह किये ही अपने गले में पहनी हुई रुद्राक्ष माला से निम्न गुरु मंत्र की एक माला मंत्र जप करे -

पूर्वदिशाकृत गुरु मंत्र

॥ ॐ श्रीं निखिलेश्वरनन्दाय श्रीं ॐ ॥

२ - इसके बाद साधक अग्निकोण की ओर मुंह कर बैठ जाय सामने गुरु का चित्र स्थापित करे, उसकी संक्षिप्त पूजा करे और घी का दीपक लगावे, इसके बाद हाथ में जल लेकर संकल्प करे -

ॐ योमे पूर्वगत इह गत पाप्मा पापकेनेह कर्मणा अग्निसाक्षी भूतं निखिलेश्वरानन्दम् मम समस्त दोष पाप भंजयतु भंजयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु कलिं तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम (अपना नाम उच्चारण करे) गुरु शांतिः स्वस्त्ययनंचास्तु ।

इसके बाद अग्निकोण की ओर मुंह किये किये ही अपने गले में पहनी हुई रुद्राक्ष माला से निम्न गुरु मंत्र की एक माला मंत्र जप करे-

अग्नि दिशा कृत गुरु मंत्र

ॐ ऐं ऐं निखिलेश्वरानन्दाय ऐं ऐं नमः ॥

३ - इसके बाद साधक दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाय, सामने लकड़ी के बाजोट पर श्वेत वस्त्र बिछा कर गुरु चित्र स्थापित करे, उसकी संक्षिप्त पूजा करे और घी का दीपक लगावे इसके बाद हाथ में जल लेकर संकल्प करे -

ॐ योमे पूर्वगत इह गत पाप्मा पापकेनेह कर्मणा दक्षिण नाशयतु साक्षी भूतं निखिलेश्वरानन्दम् मम समस्त दोष पाप भंजयतु भंजयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु कलिं तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम (अपना नाम उच्चारण करे) गुरु शान्तिः स्वस्त्ययनंचास्तु ।

इसके बाद दक्षिण दिशा की ओर मुंह किये किये ही अपने गले में पहनी हुई रुद्राक्ष माला से निम्न गुरु मंत्र की एक माला मंत्र जप करे -

दक्षिण दिशा कृत गुरु मंत्र

ॐ ह्रीं परमतत्वाय निखिलेश्वराय ह्रीं नमः ॥

४ - इसके बाद नैऋत्य दिशा की ओर मुंह कर सामने लकड़ी के बाजोट पर सफेद वस्त्र बिछा कर गुरु का चित्र स्थापित करे, उनकी संक्षिप्त पूजा करे और घी का दीपक जलावे इसके बाद हाथ में जल लेकर संकल्प करे -

ॐ योमे पूर्वगत इह गत पाप्मा पापकेनेह कर्मणा नैऋत्य रक्षराज साक्षी भूतं निखिलेश्वरानन्दम् मम समस्त दोष पाप भंजयतु भंजयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु कलिं तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम (अपना नाम उच्चारण करे) गुरु शान्तिः स्वस्त्ययनंचास्तु ।

इसके बाद नैऋत्य कोण की ओर मुंह किये किये ही अपने गले में पहनी हुई रुद्राक्ष माला से निम्न गुरु मंत्र की एक माला मंत्र जप करे -

नैऋत्य दिशा कृत गुरुमंत्र

ॐ क्लीं क्लीं निखिलेश्वरनन्दाय क्लीं क्लीं नमः ॥

५ - इसके बाद साधक उत्तर दिशा की ओर मुंह कर सामने लकड़ी के बाजोट पर सफेद वस्त्र बिछा कर गुरु का चित्र स्थापित करे, उसकी संक्षिप्त पूजा करे और घी का दीपक लगावे इसके बाद हाथ में जल लेकर संकल्प करे -

ॐ योमे पूर्वगत इह गत पाप्मा पापकेनेह कर्मणा उत्तर दिशा वरुण साक्षी भूतं निखिलेश्वरानन्दम् मम समस्त दोष पाप भंजयतु भंजयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु कलिं तस्मै प्रयच्छतु कृत मम (अपना नाम उच्चारण करे) गुरु शान्तिः स्वस्त्ययनंचास्तु ।

इसके बाद उत्तर दिशा की ओर मुंह किये किये ही अपने गले में पहनी रुद्राक्ष माला से निम्न गुरु मंत्र की एक माला मंत्र जप करे ।

उत्तर दिशाकृत गुरु मंत्र

।। ॐ श्रीं श्रीं श्रीं निखिलेश्वर्यै श्रीं श्रीं श्रीं नमः ।।

६- इसके बाद वायव्य दिशा की ओर मुंह कर सामने लकड़ी के बाजोट पर सफेद वस्त्र बिछा कर गुरु का चित्र स्थापित करे, उनकी संक्षिप्त पूजा करे और घी का दीपक जलावे इसके बाद हाथ में जल लेकर संकल्प करे -

ॐ योमे पूर्वगत इह गत पाप्मा पापकेनेह कर्मणा वायव्य यक्षराज साक्षी भूतं निखिलेश्वरानन्दम् मम समस्त दोष पाप भंजयतु भंजयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु कलिं तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम (अपना नाम उच्चारण करे) गुरु शान्तिः स्वस्त्ययनंचास्तु ।

इसके बाद वायव्य कोण की ओर मुंह किये किये ही अपने गले में पहनी हुई रुद्राक्ष माला से निम्न गुरु मंत्र जप करे ।

वायव्य दिशा कृत गुरु मंत्र

।।ॐ ऐं ह्रीं श्रीं निखिलेश्वर्यायै श्रीं ह्रीं ऐं ॐ ।।

७ - इसके बाद साधक पश्चिम दिशा की ओर मुंह कर सामने लकड़ी के बाजोट पर सफेद वस्त्र बिछा कर गुरु चित्र स्थापित करे, उसकी संक्षिप्त पूजा करे और घी का दीप लगावे, इसके बाद हाथ में जल लेकर संकल्प करे -

ॐ योमे पूर्वगत इह गत पाप्मा पापकेनेह कर्मणा पश्चिम सोम विप्रराज साक्षी भूतं निखिलेश्वरानन्दम् मम समस्त दोष पाप भंजयतु भंजयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु कलिं तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम (अपना नाम उच्चारण करे) गुरु शांतिः स्वस्त्ययनंचास्तु ।

इसके बाद पश्चिम दिशा की ओर मुंह किये किये ही अपने गले में पहनी हुई रुद्राक्ष माला से निम्न गुरु मंत्र की एक माला से मंत्र जप करे ।

पश्चिम दिशा कृत गुरु मंत्र

।। ॐ क्रीं निखिलेश्वरानन्दाय क्रीं ॐ ।।

८ - इसके बाद साधक ईशान दिशा की ओर मुंह कर सामने लकड़ी के बाजोट पर सफेद वस्त्र बिछा कर गुरु का चित्र स्थापित करे, उनकी संक्षिप्त पूजा करे और घी का दीपक जलावे इसके बाद हाथ में जल लेकर संकल्प करे -

ॐ योमे पूर्वगत इह गत पाप्मा पापकेनेह कर्मणा ईशान पृथुरत्न साक्षीभूतं निखिलेश्वरानन्दम् मम समस्त दोष पाप भंजयतु भंजयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु कलिं तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम (अपना नाम उच्चारण करे) गुरु शान्तिः स्वस्त्ययनंचास्तु ।

इसके बाद ईशान कोणकी ओर मुंह किये किये ही अपने गले में पहनी हुई रुद्राक्ष माला से निम्न गुरु मंत्र की एक माला मंत्र जप करे -

ईशान दिशा कृत गुरु मंत्र

॥ ॐ ह्रीं निखिलेश्वर्यै ह्रीं नमः ॥

९ - इसके बाद ऊपर आकाश (अनन्त) दिशा की ओर मुंह कर सामने लकड़ी के बाजोट पर सफेद वस्त्र बिछा कर गुरु का चित्र स्थापित करे, उनकी संक्षिप्त पूजा करे और घी का दीपक लगावे इसके बाद हाथ में जल लेकर संकल्प करे -

ॐ योमे पूर्वगत इह गत पाप्मा पापकेनेह कर्मणा अनन्त ब्रह्मा सृष्टिराज साक्षीभूतं निखिलेश्वरानन्दम् मम समस्त दोष पाप भंजयतु भंजयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु कलिं तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम (अपना नाम उच्चारण करे) गुरु शांतिः स्वस्त्ययनंचास्तु ।

इसके बाद साधक ऊपर आकाश की ओर मुंह किये किये ही अपने गले में पहनी हुई रुद्राक्ष माला से निम्न गुरु मंत्र की एक माला से मंत्र जप करे -

अनन्त (आकाश) दिशा कृत गुरु मंत्र

॥ ॐ "निं" निखिलेश्वर्यौ "निं" नमः ॥

१० - इसके बाद भूमि की ओर नीचे मुहं कर सामने लकड़ी के बाजोट पर सफेद वस्त्र बिछा कर गुरु का चित्र स्थापित करे, उनकी संक्षिप्त पूजा करे और घी का दीपक जलावे इसके बाद हाथ में जल लेकर संकल्प करे -

ॐ योमे पूर्व गत इह गत पाप्मा पापकेनेह कर्मणा अधः नागराजो साक्षीभूतं निखिलेश्वरानन्दम् मम समस्त दोष पाप भंजयतु भंजयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु कलिं तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम (अपना नाम उच्चारण करे) गुरु शान्तिः स्वस्त्ययनंचास्तु ।

इसके बाद साधक भूमि की ओर मुंह किये किये ही अपने गले में पहनी रुद्राक्ष माला से निम्न गुरु मंत्र जप करे -

अधः (भूमि) दिशाकृत गुरु मंत्र

॥ ॐ निखिलं निखिलेश्वर्यै निखिलं नमः ॥

इसके बाद साधक इस प्रकार दसों दिशाओं से संबंधित प्रयोग सम्पन्न कर पुनः मूल गुरु मंत्र की एक माला मंत्र जप पूर्व दिशा की ओर मुंह कर करे ।

॥ ॐ परमतत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः ॥

इस प्रकार एक गुरुवार का प्रयोग सम्पन्न होता है । इस प्रकार साधक आठ गुरुवार इसी प्रकार से प्रयोग सम्पन्न कर लें तो यह दुर्लभ और अद्वितीय प्रयोग सम्पन्न हो जाता है और इसके बाद साधक पूर्णतः पवित्र, दिव्य, तेजस्वी, प्राणश्चेतना युक्त एवं सिद्धाश्रम का अधिकारी होता हुआ, गुरु का अत्यन्त प्रिय शिष्य हो जाता है, और साथ ही साथ उसके पिछले जीवन और इस जीवन के सभी प्रकार के पाप दोष समाप्त हो जाते है ।

यह दुर्लभ प्रयोग प्रत्येक साधक के लिए अपने आप में अद्वितीय है औह साधकों को इसका अवश्य ही लाभ उठाना चाहिए ।

****

तांत्रोक्त गुरु साधना

यह एक ऐसी साधना है, जिसकी तुलना अन्य उच्च कोटि की साधनाओं से भी नहीं की जा सकती । इस साधना के माध्यम से समस्त दसों महाविद्याओं को सिद्ध किया जा सकता हैं और जो इस साधना को सम्पन्न कर लेता है, उसके लिए जीवन में अन्य कोई साधना बाकी नहीं रहती ।

समस्त साधनाओं का प्रारम्भ और समापन गुरु से हो होता है, तंत्र में गुरु को समस्त महाविद्या साधनाओं एवं अन्य देव-साधनाओं में सर्वोच्यता प्रदान की है, उन्हें भगवान शिव का साक्षात स्वरूप माना गया है ।

ॐ संविद्रुपाय शान्ताय शंभवे सर्वसाक्षिणे ।
सोमनाथाय महसे शिवाय गुरवै नमः ।।
गुरुरेकः शिवः प्रोक्तः, सोऽहं देवि न संशयः ।
गुरुस्त्वमपि देवेशि । मन्त्रे गुरौ देवे, न हि भेदः प्रजायते ।।
मन्त्रे वा गुरु-देवेवा न भेदं यस्तु कल्पते ।
तस्य तुष्टा जगद्धात्रो, किन्न दद्याद् दिने-दिने ।।

भगवान शिव ने स्वयं कहा है - हे देवी, गुरु ही एक मात्र शिव कहे गये है और वह मैं ही हूं, इसमें कोई सन्देह नहीं । तुम जगत जननी अम्बिका स्वरूप हो और तुम भी गुरु मंत्र और दुर्गा हौ, अतः मंत्र, गुरु और देवता में कोई भेद नहीं होता, इन तीनों की एकता भावना बुद्धि द्वारा करते रहने से ही मंत्र गुरु और देवता में कोई भेद नहीं करता, उस पर जगदम्बा प्रसन्न हो कर सब कुछ दे देती है ।

''पादुका तंत्र'' में गुरु को शिव और शक्ति का समन्वय स्वरुप माना है और महर्षि ने गुरु का ध्यान इस प्रकार बताया है -

''निज-शिरसि श्वेत-वर्ण सहस्त्र-दल-कमलकर्ण कार्न्नत-चन्द्रमण्डलोपरि स्वगुरु शुक्ल-वर्ण शुक्लालंकार - भूषित ज्ञानानन्द-मुदित मानसं सच्चिदानन्द-विग्रह चतुर्भुजं ज्ञान-मुद्रा - पुस्तक-वराभय-कर त्रि-नयनं प्रसन्न-वदनेक्षणं सर्व देव-देवं वामांग वामहस्त-धृत-लीला कमलया रक्त-वसना भरणाया स्व-प्रियया दक्ष-भुजेनालिंगं परम-शिव-स्वरुपं शान्तं सुप्रसन्न ध्यात्वा तच्चरण-कमल-युगन-विगलदमृत-धारया स्वात्मानंप्लुतं विभाव्य मानसोपचारैराराध्य'' ।

गुरु पूजन प्रारम्भ करते समय सबसे पहले श्री गुरु मण्डलार्चन करना चाहिए -

श्रीनाथादि गुरु-त्रयं गण-पति पीठ-त्रयं भैरव,
सिद्धौध बटुक-त्रयं पद-युगं दूती-क्रमं मण्डलम्

वीरानष्ट-चतुष्क-षष्टी-नवकं वीरावली-पंचकं
श्रीमन्मालिनि-मन्त्रराज-सहितं वन्दे गुरोर्मण्डलम् ।।

उपरोक्त चार पंक्तियां सामान्य पक्तियां नहीं है, अपितु इसके प्रत्येक अक्षर का अपने आप में महत्व है जो कि तांत्रिक षोडशी क्रम में स्पष्ट रूप से बताया गया है ।

गुरु ध्यान --

द्विदल कमलमध्ये बद्धसंवितसमुद्रं
धृतशिवमयगात्रं साधकानुग्रहार्थम्
श्रुतिशिरसिविभान्तं बोधमार्तण्डमूर्ति
शमिततिमिरशोकं श्रीगुरु भावयामि ।

हृदंबुजे-कर्णिकमध्यसंस्थं सिंहासने संस्थितिदिव्यमूर्तिम् ।
ध्यायेगुरुं चन्द्रशिलाप्रकाशं चित्पुस्तकाभीष्टवरं-दधानम् ॥
श्री गुरुवैनमः ध्यानं समर्पयामि ॥

आवाहन

ॐ स्वरुपनिरूपण हेतवे श्री गुरवे नमः । ॐ स्वच्छप्रकाश-विमर्श-हेतवे श्री परमगुरुवे नमः । ॐ स्वात्माराम पंजरविलीन-तेजसे श्री परमेष्टि गुरुवे नमः, आवाह्यामि पूजयामि ।

आवाहन के बाद गुरुदेवा को अपने शरीर के षटचक्रों में स्थापित करें ।

श्री शिवानन्दनाथ परा-शक्त्याम्बा मूलाधारे स्थापयामि ।
श्री सदाशिवानन्दनाथ चिच्छक्त्याम्बा स्वाधिष्ठान चक्रे स्थापयामि।
श्री ईश्वरानन्दनाथ आनन्द शक्त्याम्बा मणिपूर चक्रे स्थापयामि।
श्री रुद्र-देवानन्दनाथ इच्छा शक्त्याम्बा अनाहत चक्रे स्थापयामि।
श्री विष्णु-देवानन्दनाथ-शक्त्याम्बा विशुद्ध चक्रे स्थापयामि ।
श्री ब्रह्म-देवानन्दनाथ क्रिया-शक्त्याम्बा सहस्त्रार चक्रे स्थापयामि।

चन्दन अक्षत

निम्न नौ "सिद्धोध" का उच्चारण करते हुए गुरु के चरणों पर अक्षत समर्पित करें ।

ॐ उन्मनाकाशानन्दनाथ-जलं समर्पयामि
श्री समानाकाशानन्दनाथ-गंगाजल स्नानं समर्पयामि
व्यापकानंदनाथ-सिद्धयोगाजलं समर्पयामि
शक्त्याकाशानंदनाथ-चन्दनं समर्पयामि
ध्वन्याकाशानंदनाथ-कुंकुमं समर्पयामि

ध्वनिमात्राकाशानंदनाथ-केशरं समर्पयामि
अनाहताकाशानंदनाथ-अष्टगन्धं समर्पयामि
विन्द्वाकाशानंदनाथ-अक्षतं समर्पयामि
द्वान्द्वाकाशानंदनाथ-सर्वोपचारार्थे समर्पयामि

पुष्प-बिल्व-पत्र

ॐ ह्रीं श्रीं हंसः सोहं-स्वरूप-निरुपण हेतवे स्व-गुरुं-ष्पंसमर्पयामि

ॐ सोहं हंसः शिव-स्वच्छ-प्रकाश-विमर्श हेतवे परमगुरुं-बिल्व पत्रं समर्पयामि

ॐ हंसः शिवः सोहं हंसः स्वात्माराम-परमानंद पंजरविलिन-तेजसे परमेष्ठि-गुरुं "हृदय पुष्पं" समर्पयामि

दीप

श्री महादर्मनाम्बा सिद्ध ज्योति समर्पयामि । श्री सुन्दर्यम्बा सिद्ध प्रकाशं समर्पयामि । श्री करालाम्बिका सिद्ध दीप समर्पयामि । श्री त्रिबाणाम्बा सिद्ध ज्ञान दीप समर्पयामि । श्री भीमाम्बा सिद्ध हृदय दीप समर्पयामि । श्री कराल्याम्बा सिद्ध सिद्ध दीप समर्पयामि । श्री खराननाम्बा सिद्ध तिमर नाश दीप समर्पयामि । श्री विधीशालीनाम्बा पूर्ण दीप समर्पयामि

नीराजन

इसके बाद ताम्र पात्र में जल, कुंकुम, अक्षत एवं पुष्प लेकर गुरु चरणों में समर्पित करें -

श्री सोममण्डल नीराजनं समर्पयामि । श्री सूर्यमण्डल नीराजनं समर्पयामि । श्री अग्नि मण्डल नीराजनं समर्पयामि । श्री ज्ञान मण्डल नीराजनं समर्पयामि । श्री ब्रह्म मण्डल नीराजनं समर्पयामि ।

तत्पश्चात् अपनें दोनों हाथों में पुष्प लेकर निम्न "पंच पञ्चिका" उच्चारण करते हुए इन दिव्य महाविद्याओं की प्राप्ति के लिए प्रार्थना करें -

१ पंच लक्ष्यैः- (१) श्री विद्या-लक्ष्म्यम्बा, (२) श्री एकाक्षर-लक्ष्म्यम्बा, (३) श्री महालक्ष्मी-लक्ष्म्यम्बा, (४) श्री त्रिशक्ति-लक्ष्मी-लक्ष्म्यम्बा, (५) श्री सर्वसाम्राज्य-लक्ष्मी-लक्ष्म्यम्बा ।

२ पंच-कोश - (१) श्री विद्या-कोशाम्बा, (२) श्री पर-ज्योतिः-कोशाम्बा, (३) श्रीपरि-निष्कल-शाम्भवी-कोशाम्बा, (४) श्री अजपा-कोशाम्बा, (५) श्री मातृका-कोशाम्बा ।

३ पंच कल्पलता - (१) श्री विद्या-कल्पलताम्बा (२) श्रीत्वरिता-कल्पलताम्बा (३) श्रीपारि-जातेश्वरी कल्पलताम्बा (४) श्री त्रिपुटा-कल्पलताम्बा (५) श्रीपंचबागेश्वेरी-कल्पलताम्बा ।

४ पंच-कामदुघा - (१) श्री विद्या-कामदुधाम्बा (२) श्री अमृतपीठैश्वरी-कामदु-धाम्वा (३) श्री सुधासू कामदुधाम्बा, (४) श्री अमृतेश्वरि-कामदुधाम्बा (५) श्री अन्नपूर्णा-कामदुधाम्बा ।

५ पंच-रत्नविद्या - (१) श्री विद्या-रत्नाम्बा (२) श्री सिद्धलक्ष्मी-रत्नाम्बा (३) श्रीमातंगेश्वरी-रत्नाम्बा (४) श्री भुवनेश्वरी-रत्नाम्बा (५) श्री वाराही-रत्नाम्बा ।

उपरोक्त "पंच-पचिका" विश्व की श्रेष्ठ साधनाएं है और इन साधनाओं की प्राप्ति के लिए ही गुरुदेव से प्रार्थना की जाती है, इसमें प्रत्येक साधना का उच्चारण कर "प्राप्तिं प्रार्थयेत्" बोलना चाहिए, उदाहरण के लिए "पंच लक्ष्म्यै" में पहली साधना "श्री विद्या लक्ष्म्यम्बा प्राप्तिं प्रार्थयेत्" उच्चारण करना चाहिए, इसी प्रकार से अन्य स्थान पर भी उच्चारण करना चाहिए ।

श्री मन्मालिनी

अंत में तीन बार श्रीमन्मालिनी का उच्चारण करना चाहिए जिससे कि गुरुदेव की शक्ति, तेज और सम्पूर्ण साधनाएं पूर्णता के साथ प्राप्त हो सके ।

ॐ अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढ़ं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं हंसः सो ऽ हं गुरुदेवायै नमः ।

अन्त में हाथ जोड़ कर गुरुदेव की प्रार्थना स्तुति करें ।

लोक-वीरं महान्पूज्यं, सर्व-रक्षा-करं विभुम्
शिष्य-हृदयानन्दं, शास्तारं प्रणमाम्यहम् ॥१॥
प्रि-पूज्यं विश्व-वन्द्यं विष्णु-शम्भौः प्रियं सुतम् ।
क्षिप्र-प्रसाद-निरतं, शास्तारं प्रणमाम्यहम् ॥२॥
मत्त-मात्तंग-गमनं कारुण्यामृत-पूरितम् ।
सर्व-विघ्न-हरं देवं शास्तारं प्रणमाम्यहम् ॥३॥
अस्मत्-कुलेश्वरं देवं अस्मच्छत्रु-विनाशनम् ।
अस्मादिष्ट-प्रदातारं शास्तारं प्रणमाम्यहम् ॥४॥
यस्य धन्वन्तरिर्माता, पिता रुद्रौ भिषक-तमः
तं शास्तामहं वन्दे, महा-वैद्य दया-निधिम् ॥५॥

समर्पण

देवनाथ गुरौस्वामिन् देशिकस्वात्मनायक ।

त्राहि त्राहि कृपा सिन्धो पूजा पूर्णतरां कुरु ॥

अनया पूजया श्री गुरुः प्रीयन्ताम् । ॐ तत्सद् ब्रह्मर्पणमस्तु ॥

****

गुरु मंत्र साधना

गुरु बीज के प्रत्येक अक्षर का कुण्डलिनी के चक्रों पर जप करने से निश्चय ही कुण्डलिनी जाग्रत होती है, सहस्त्रार दल विकसित हो जाता है, और ऐसा साधक निश्चय ही सहस्त्रार-भेदन में पूर्ण सफलता प्राप्त कर लेता है ।

इसमें प्रत्येक अक्षर के ९-९ लाख (कुल 81 लाख) जप करना चाहिए और फिर पूरे गुरु मंत्र का छः लाख जप करके पुरश्चरण सम्पन्न कर लेना चाहिए ।

गुरु मंत्र की सिद्धि से जीवन में समस्त ऐश्वर्य स्वतः प्राप्त हो जाते हैं ।

मूल मंत्र - ॐ परमतत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः ।

बीजाक्षर जप

इसमें प्रत्येक बीज मंत्र के नौ-नौ लाख जप करने है, और यह जप सम्बन्धित चक्र पर ध्यान केन्द्रित करके करना है ।

बीजाक्षर	स्वरूप	चक्र स्थान
प	चन्द्रमा के समान प्रकाश	विशुद्ध चक्र
र	सूर्य के समान तेजस्विता	आज्ञा चक्र
म	अग्नि के समान रूप	अनाहत चक्र
त	श्याम कान्ति	अनाहत चक्र
त्वा	रक्त के समान अरुण आभा	स्वाधिष्ठान चक्र
य	नील कान्ति	मणिपूर चक्र
नारायणाय	गौर कान्ति	स्वाधिष्ठान चक्र
गुरुभ्यो	कृष्ण समान कान्ति	मूलाधर चक्र
नमः	धूम्र समान कान्ति	अनाहत चक्र

इस प्रकार षटचक्र के दलों पर गुरु मंत्र के बीजाक्षरों का ध्यान करते हुए, गुरु द्वारा प्रदत्त माला पर प्रत्येक बीजाक्षर का ९ लाख करना चाहिए, साथ ही नित्य निम्न विनियोग करें ।

विनियोग - ॐ अस्य गुरु मंत्रस्य ब्रह्म-विष्णु-महेश्वरा ऋषयः गायत्री उष्णिक्-अनुष्टुप छन्दांसि, महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती देवताः, ब्रह्म शाकम्भरी भीमा शक्तयः ब्रह्माण्ड बीजानि, ॐ कीलकं अग्नि वायु सूर्याः तत्वानि "अमुक" कार्य सिद्धयर्थे मंत्र जपे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यास - इस न्यास को करने से सारा शरीर दिव्य और चैतन्य हो जाता है ।

ॐ ब्रह्म विष्णु महेश्वर ऋपिभ्यो नमः - शिरसि । ॐ गायत्री-उष्णिक्-अनु-ष्टप छन्देभ्यो नमः - मुखे । ॐ महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती देवताभ्यो नमः - हृदि । ॐ ब्रह्म शाकम्भरी-भीमा-शक्तिभ्यो नमः दक्ष-स्तने । ॐ ब्रह्माण्ड बीजानि नमः-वाम स्तने । ॐ ह्रीं कीलकाय नमः - नाभौ । ॐ अग्नि-वायु सूर्य - तत्वेभ्यो नमः - नेत्रयोः । ॐ "अमुक" कार्य सिद्धयर्थे मंत्र जपे विनियोगः नमः - सर्वांगे।

वर्ण मातृका न्यास - इससे गुरु, ब्रह्म स्वरूप बन कर साधक के शरीर में समाहित हो जाते है ।

ॐ ॐ अं आं कं खं गं घं ङं इं ईं - हृदयाय नमः ॐ परम उं ऊं चं छं जं झं ञं ऋं - सिरसे स्वाहा ॐ तत्वाय लृं टं ठं डं ढं णं लृं लृं - शिखायै वौषट् ॐ नारायणाय एं तं थं दं धं नं ऐं - कवचाय हुम् ॐ गुरुभ्यो ओं पं फं बं भं मं औं - नेत्र त्रयाय वौषट् ॐ नमः अं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं अः - अस्त्राय फट् ।

सारस्वत न्यास - इसके करने से शरीर के जड़ता, आलस्य और पाप नष्ट हो जाते है ।

इसमें गुरु मंत्र का जप निम्न स्थानों पर दाहिने हाथ की उंगलियां रखते हुए करें ।

कनिष्ठिका - ६ बार, अनामिका - ६ बार, मध्यमा - ३ बार, तर्जनी - ४ बार, अंगुष्ठ - ६ बार, करतलकरपृष्ठ ६ बार, पृष्ठभाग - ११ बार, मणिबन्ध - ८ बार, हस्त - ९ बार, हृदय - १०. बार, सिर - ११ बार, शिखा - १२ बार, दोनों कवच - ६ बार, दोनों नेत्र - ६ बार, सर्वांग - १५ बार

मातृका न्यास - यह न्यास करने से साधक त्रिकालज्ञ, एवं त्रैलोक्य विजयी हो जाता है ।

ॐ गुरुभ्यो ब्राह्मी पूर्वतो मां पातु । ॐ गुरुभ्यो माहेश्वरी आग्नेय मां पातु । ॐ गुरुभ्यो कौमारी दक्षिणे मां पातु । ॐ गुरुभ्यो वैष्णवी नैऋते मां पातु । ॐ गुरुभ्यो वाराही पश्चिामे मां पातु । ॐ गुरुभ्यो इन्द्राणी वायव्ये मां पातु । ॐ गुरुभ्यो चामुण्डे उत्तरे मां पातु। ॐ गुरुभ्यो महालक्ष्मी ऐशान्ये मां पातु । ॐ गुरुभ्यो व्योमेश्वरी ऊर्ध्वे मां पातु । ॐ गुरुभ्यो सप्त-द्वीपेश्वरी भूमौ मां पातु । ॐ गुरुभ्यो कामेश्वरी पाताले मां पातु ।

ब्रह्म न्यास - इस न्यास से साधक चिरयौवन मय बना रह कर सभी दृष्टियों से पूर्णता प्राप्त करता है ।

ॐ ब्रह्म शून्य आसनायै नमः - पूर्वांगे मां पातु । ॐ विमुक्तायै ज्ञान खड्गे हस्तायै नमः - दक्षिणे मां पातु । ॐ चैतन्य पल्लवायै नमः - पृष्ठे मां पातु । ॐ गुरुवै सर्व सिद्धि हस्तायै नमः - वामांगे मां पातु।

ॐ सर्व सिद्धि प्रदायै नमः-मस्तकादि चरणान्तं मां पातु । ॐ शिष्य प्रियायै नमः - पादादि मस्तकान्तं मां पातु ।

शून्य न्यास - इस न्यास को करने से साधक की मन की सभी कामनाओं की पूर्ति होती है ।

ॐ ब्रह्मणे नमः - पादादि नाभि पर्यन्तं सदा मां पातु । ॐ नारायणाय नमः नाभौ विशुद्धि पर्यन्त मां पातु । ॐ रुद्राय नमः ब्रह्म रन्ध्रान्ते नेत्रयोः मां पातु । ॐ त्रिलोचनाय नमः पादयोः मां पातु । ॐ दिव्याय नमः करयोः मां पातु । ॐ ज्ञानाय नमः नेत्रयोः मां पातु । ॐ दिव्य चेतनायै नमः सर्वांगे मां पातु । ॐ आनन्द-मय परमात्मने नमः परात्पर-देहभागे मां पातु ।

देवी न्यास - इस न्यास को करने से साधक को सिद्धाश्रम प्राप्ति होती है ।

ॐ गुरुवै अष्टादश भुजायै नमः मध्ये मां पातु । ॐ चैतन्य षोडश भुजायै नमः ऊर्ध्व मां पातु । ॐ कालक्षयायै दश भुजायै नमः अधः मां पातु । ॐ शत्रुमर्दनायै नमः हस्तयोः मां पातु । ॐ ज्ञानाय नमः नेत्रयोः मां पातु । ॐ दिव्यायै नमः पादयो मां पातु । ॐ महेशाय नमः सर्वांगे मां पातु ।

वर्ण न्यास - इस न्यास से जीवन के सभी रोग समाप्त हो जाते है ।

ॐ परम नमः - ब्रह्मरन्ध्रे ॐ तत्वाय नमः - दक्ष नेत्रे ॐ नारायणाय नमः वाम नेत्रे ॐ गुरुभ्यो नमः - दक्ष-वाम कर्णे ॐ नमः मुखे ॐ ॐ नमः - सर्वांगे ।

विन्ध्य न्यास - इस न्यास से जीवन के सभी दुख दूर हो जाते है ।

ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः ।

पैरों से लगाकर सिर तक और सिर से लगाकर पैरों तक ९-९ बार यह मंत्र उच्चारण करते हुए स्पर्श करें ।

व्यापक न्यास - इस न्यास से समस्त देवताओं का सान्निध्य प्राप्त होता है ।

१ - गुरु मंत्र को मस्तक से पैरों तक उच्चारण करते हुए आठ बार जपे ।

२ - ॐ परम-पैरों से मस्तक तक आठ बार जपे ।

३ - ॐ तत्वाय-सामने के भाग पर स्पर्श करते हुए आठ बार मंत्र जपे ।

४ - ॐ नारायणाय - उच्चारण करते हुए सिर पर स्पर्श करते हुए आठ बार मंत्र जपे ।

५ - ॐ गुरुभ्यो-उच्चारण करते हुए पीछे के भाग पर आठ बार मंत्र जपे ।

६ - ॐ नमः - मंत्र उच्चारण करते हुए पूरे शरीर पर आठ बार मंत्र उच्चारण करें ।

षडंग न्यास - इस न्यास को करने से त्रैलोक्य, साधक के वश में हो जाता है ।

ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः हृदयायै नमः
ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः सिरसे स्वाहा
ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः शिखायै वषट्
ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः कवचाय हुम्
ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः नेत्र-त्रयाय वौषट्

इसके बाद ''नारायण'' बीज को गौरवर्ण का ध्यान करते हुए गुरु स्तोत्र का पाठ करें ।

इसके बाद ''गुरुभ्यो'' बीज का शुक्ल वर्ण का ध्यान करते हुए निम्न श्लोक का उच्चारण करें ।

द्विदल कमलमध्ये बद्धसंवित्समुद्रं धृतशिवमयगात्रं साधकानुग्रहार्थम् । श्रुतिशिरसिविभान्तं बोधमार्तण्डमूर्तिं शमिततिमिरशोक श्रीगुरु भावयामि ।। हृदंबुजे-कर्णिकमध्यसंस्थं सिंहासने संस्थितदिव्यमूर्तिम्। ध्यायेद्गुरु चन्द्रशिलाप्रकाशं चित्पुस्तकाभीष्टवरंदधानम् ।।

इसके बाद ''नमः'' बीज मंत्र का उच्चारण करते हुए निम्न पाठ करें ।

ब्रह्मानन्दं परम-सुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिं द्वन्द्वातीतं गगन-सदृशं तत्वमस्यादिलक्ष्यम् । एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधीसाक्षिभूतं भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरु तं नमामि ।।

इसके बाद मूल षडंग न्यास करें ।

बीज	कर-न्यास	अंग न्यास
ॐ परम	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ॐ तत्वाय	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
ॐ नारायणाय	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्
ॐ गुरुभ्यो	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुम्
ॐ नमः	कनिष्ठिकाभ्यां नमः	नेत्र त्रयाय वौषट्
ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः	करतल - करपृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट् ।

व्यापक न्यास

ॐ ॐ नमः शिरसि ॐ प नमः नेत्रयोः ॐ र नमः ललाटे ॐ म नमः ग्रीवा ॐ त नमः भ्रुवौ ॐ त्वा नमः कर्णयोः ॐ य नमः गण्डयोः ॐ ना नमः मुखे । ॐ रा नमः दन्त-पंक्तयोः ॐ य नमः जिह्वायां ॐ णा नमः स्कन्धयोः ॐ य नमः कण्ठे ॐ गु नमः भुजयोः ॐ रू नमः हृदि ॐ भ्यो नमः पार्श्वयोः ॐ न नमः पृष्ठे ॐ मः नमः नाभौ ॐ परमतत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः सर्वांगे

दिक् न्यास

ॐ ॐ प्राच्यै नमः ॐ परम आग्नेय्यै नमः ॐ तत्वाय दक्षिणायै नमः ॐ नारायणाय नैऋत्यै नमः ॐ गुरुभ्यो प्रतीच्यै नमः ॐ नमः वायव्यै नमः ॐ परमतत्वाय नारायणाय ऊर्ध्वायै नमः ॐ गुरुभ्यो नम भूम्यै नमः

इसके बाद मानस पूजन करें ।

जप समर्पण मंत्र द्वारा जप समर्पण करें ।

****

सर्व सिद्धि प्रदाय

श्री गुरुदेव निखिलेश्वरानन्द प्रयोग

"स्वामी श्री निखिलेश्वरानन्दजी साधना प्रयोग" को सम्पन्न कर हम सभी सन्यासी शिष्यों ने इस पूर्णता को प्राप्ती की विशेष रूप से स्वामी निखिलेश्वरानन्दजी के लिए ही यह प्रयोग विधि बनाई गई थी, जो प्रयोग विधि महा तेजस्वी योगीराज महारूपा जी से प्राप्त हुई थी, और जिसके माध्यम से साधनाओं में सम्पूर्ण सिद्धियां प्राप्त करने में हम लोगों ने सफलता पाई है ।

विनियोग

ॐ अस्य श्री प्राणात्मन निखिलश्वरानन्द मंत्रस्य भगवान श्री महारूपा ऋषि गायत्री छन्द निखिलेश्वरानन्द योगीश्वर्यै, क्लीं बीजम्, श्रीं शक्ति ऐं कीलकं, प्रणवो ॐ व्यापक मम समस्त क्लेश परिहारार्थ चतुर्वर्ग फल प्राप्तये सर्व सिद्धि सौभाग्य वृद्धयर्थे मंत्र जपे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यास

श्री महारूपा ऋषये नमः - शिरसि । गायत्री छन्दसे नमः - मुखे। निखिलेश्वरानन्द ऋषिभ्यो नमः हृदि । श्रीं शक्तये नमः- नाभौ। क्लीं बीजाय नमः - गुह्ये । ऐं - कीलकाय नमः - पादयोः । ॐ व्यापकाय नमः - सर्वागें । मम समस्त क्लेश परिहारार्थ चतुर्वर्ग फल प्राप्तये सर्व सिद्धि सौभाग्य वृद्धयर्थे मंत्र जपे विनियोगाय नमः - पुष्पांजली ।

पडंग न्यास	कर-न्यास	अंग न्यास
ॐ ऐं श्रीं क्लीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
प्राणात्मन	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
''निं''	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
सर्व सिद्धि प्रदाय	अनामिकाभ्यां हुं	कवचाय हूं
निखिलेश्वरानंदाय	कनिष्ठाकाभ्यां वौषट्	नेत्र त्रयाय वौषट्
नमः	कर-तल-कर पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

इसके बाद मानस पूजन करें

मंत्र

ॐ ऐं श्रीं क्लीं प्राणात्मन ''निं'' सर्व सिद्धि प्रदाय निखिलेश्वरानन्दाय नमः (सवा लाख मंत्र जप से सिद्धि)

प्रति दिन निखिलेश्वारानन्द स्तवन का पाठ करना चाहिए, अथवा सोमवार और गुरुवार को तो निश्चय ही इसका पाठ कर बाद में ही अन्न जल ग्रहण करना चाहिए।

देह सूक्ष्म प्रयोग

उपरोक्त स्तवन पाठ के बाद निम्न प्रकार से देह सूक्ष्म प्रयोग करें।

साधक हाथ में जल लेकर संकल्प करे कि मैं अमुक गोत्र, अमुक नाम का शिष्य अपने देह की रक्षा करता हुआ, अपने स्थूल देह को सूक्ष्म देह में परिवर्तित कर समस्त ब्रह्माण्ड में विचरण करने की सामर्थ्य प्राप्त करने के लिए परम पूज्य गुरुदेव को और उनकी

समस्त शक्तियों उनके समस्त ज्ञान, और उनकी समस्त सिद्धियों के साथ मैं उन्हें अपने शरीर में समाहित करता हूँ।

गुरुदेव शिरः पातु हृदयं निखिलेश्वरः।
कंठं पातु महायोगी वदनं सर्व-दृग्-विभुः।
करो मे पातु पूर्णात्मा पादो रक्षतु स्वामिनः।
सर्वांगं सर्वदा पातु परब्रह्म सनातनम्।
यः पठेद् गुरु कवचं ऋषि-न्यास पुरः सरम्।
स ब्रह्म ज्ञानमासाद्य साक्षात् ब्रह्म मयो भवेत्।
भूर्जे विलिख्य गुटिकां स्वर्णस्थां धारयेद् यदि।
कण्ठे दक्षिणे बाहौ सर्व सिद्धिश्वरो भवेत्।
इत्येतत् परमः गुरु कवचं यः प्रकाशितम्।
दद्यात् प्रियाय शिष्याय-भक्ताय प्रिय धीमते।

इस प्रकार साधक इस स्तोत्र कवच का पाठ कर दोनों हाथ जोड़ कर गुरुदेव के चित्र या उनकी पादुका के सामने भक्तिभाव के साथ प्रणाम करे -

करुणामय ! दीनेश ! तवाहं शरणं गतः।
त्वत्-पदाभ्योरुहच्छायां देहि भूर्ध्नि यशोधन ॥

इस प्रकार साधना और प्रयोग सम्पन्न करने के बाद जब गुरु प्रसन्न होते है, तो उनके चित्र से या उसकी पादुका से (यदि वे साक्षात उपस्थित हो तो उनके मुंह से) शब्द उच्चरित होते हैं -

उत्तिष्ठ वत्स। मुक्तोऽसि ब्रह्म-ज्ञान-परो भव।
जितेन्द्रियः सत्य-वादी बलारोग्यं सदास्तु ते ॥

यदि पूज्य गुरुदेव सशरीर सामने उपस्थित न हो तो साधक ऐसा अनुभव करे, कि पूज्य गुरुदेव उसे ऐसा ही आशीर्वाद दे रहे है।

अर्थात् हे पुत्र, हे शिष्य, हे आत्मीय, उठो, तुम मुक्त हो, मेरे शिष्य रहते हुए ब्रह्म ज्ञान का अध्ययन करो, तुम इन्द्रियों पर अपने विकारो और बुद्धि पर नियंत्रण करते हुए सत्यवादी बने रहो, और चुनौतियों का दृढता के साथ सामना करो। बल और आरोग्य हमेशा तुम्हारे साथ रहे और तुम पूर्णता प्राप्त करो।

इसके बाद साधक खडे हो कर पूर्ण भक्ति भाव से गुरुदेव की आरती सम्पन्न करे और गुरुदेव को समर्पित किया हुआ प्रसाद स्वयं तथा अपने परिवार को दे, तथा गुरुदेव का आज्ञाकारी हो कर देवता के समान भूमण्डल पर विचरण करता हुआ, उनके आदर्शों का पालन करे।

****

तांत्रोक्त

गुरु साधना से अखण्ड लक्ष्मी प्राप्ति

लक्ष्मी प्राप्ति का श्रेष्ठतम प्रयोग तो गुरु साधना के द्वारा ही संभव है। क्योंकि गुरु का तात्पर्य केवल ज्ञान देने वाला नहीं है अपितु जीवन में पूर्णता प्रदान करने वाला है।

विश्वामित्र ने एक स्थान पर गोपनीय ढंग से स्वीकार किया है, कि गुरु अपने आप में समस्त ऐश्वर्य का अधिपति होता है, अतः गुरु साधना के द्वारा उस ऐश्वर्य को प्राप्त किया जा सकता है।

विश्वामित्र ने साधनाक्रम को समझाते हुए बताया है कि तीन प्रकार की साधनाएं होती है - १) अधम, (२) मध्यम तथा (३) उत्तम।

उत्तम साधना

उत्तम साधना या उत्तम उपासना वह कही जाती है, जिसमें अपने आपको गुरु के मन और प्राणों में विसर्जित कर देने की क्रिया होती है, साधना के प्रारम्भ में ही उसकी भावना यह होती है, कि मेरी स्थिती नगण्य है, वह अपने दिन भर के कार्य कलाप यह मान कर इस चिन्तन के साथ सम्पन्न करता है, कि यह कार्य गुरुदेव के लिए करना ही है, यह सब कुछ गुरुदेव का ही है, मैं तो इस पूरे कार्य या सम्पति का मात्र ट्रष्टी हूँ, और जो जिम्मेवारी या पारिवारिक कार्य मुझे सौप रखे है, मुझे इसलिए करने है, क्योंकि यह सव कुछ उनका है, और उनके लिए पूर्ण जिम्मेवारी के साथ यह कार्य करते रहना है, ऐसा ही विचार साधना और उपासना के लिए होना चाहिए और ऐसी साधना को 'उत्तम साधना' कहा जाता है।

साधनाक्रम

विश्वामित्र ने एक अत्यन्त गोपनीय और दुर्लभ लक्ष्मी साधना क्रम स्पष्ट किया जिसके माध्यम से पूर्ण लक्ष्मी सिद्धहोती ही है,

यह साधना केवल मात्र तीन घण्टे की है, जो कि दिपावली की रात्रि को किसी भी समय यह साधना सम्पन्न की जा सकती है, इसमें साधक शुद्धता के साथ स्नान करे श्वेत वस्त्र धारण कर, श्वेत आसन पर उत्तर की और मुंह कर बैठ जाय और अपने सामने गुरु चित्र को स्थापित कर दे, तत्पश्चात अपने शरीर को ही गुरू का शरीर मानात हुआ अपने आपको गुरु में लीन करता हुआ, अपने आज्ञाचक्र में अर्थात दोनों भौहों के बीच 'परम तत्व गुरु' स्थापना करें ।

परम तत्व गुरु स्थापन

ऐं ह्रीं श्रीं अमृताम्भोनिधये नमः । रत्न-द्विपाय नमः । सन्तान-वाटिकायै नमः । हरिचन्दन-वाटिकायै नमः । पारिजात वाटिकायै नमः। पुष्पराग-प्रकाराय नमः गोमेद रत्न-प्राकाराय नमः वज्र रत्न प्राकाराय नमः । मुक्ता-रत्न - प्राकाराय नमः । माणिक्य-रत्न प्राकाराय नमः । सहस्त्र स्तम्भ प्राकारय नमः । आनन्द-वापिकायै नमः । बालातपोद्धाराय नमः। महाश्रृंगार-पारिखायै नमः । चिन्तामणि-गृहराजाय नमः । उत्तरद्वाराय नमः । पूर्व-द्वाराय नमः । दक्षिणद्वाराय नमः । पश्चिम द्वाराय नमः । नाना-वृक्ष-महोद्यानाय नमः । कल्प वृक्ष-वाटिकायै नमः। मन्दार वाटिकायै नमः । कदम्ब-वन वाटिकायै नमः। पद्मराग-रत्न प्राकाराय नमः । माणिक्य-मण्डपाय नमः । अमृत-वापिकायै नमः । विमर्श-वापिकायै नमः । चन्द्रिकोद्वाराय नमः । महा-पद्माटव्यै नमः । पूर्वाम्नाय नमः । दक्षिणा-म्नाय नमः । पश्चिमाम्नाय नमः । उत्तराम्नाय

नमः । उत्तर-द्वाराय नमः । महा-सिंहासनाय नमः। विष्णुमयैक-पंच-पादाय नमः । ईश्वर-मयैक पंच पादाय नमः । हंस-तूल-महोपधानाय नमः । महाविभानिकायै नमः । श्री परम तत्वाय गुरुभ्यो नमः।

इस प्रकार परम तत्व गुरु को अपने आज्ञाचक्र में स्थापित करने के वाद गुरु की द्वादश कलाओं को पात्र में जल अक्षत, कुंकुम लेकर अर्घ्य दें "ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं अं सूर्य मण्डलाय द्वादश-कलात्मने अर्घ्य-पात्राय नमः"।

इसके बाद गुरु को पुनः उनकी प्रत्येक कला का पूजन इसी प्रकार अर्घ्य अक्षत, पुष्प आदि लेकर बारह बार जल समर्पित करें।

द्वादश कला पूजन

ऐं ह्रीं श्रीं कं भं तपिन्यै नमः । ऐं ह्रीं श्रीं खं बं तापिन्यै नमः। ऐं ह्रीं श्रीं गं फं धूम्रायै नमः । ऐं ह्रीं श्रीं घं पं विश्वायै नमः । ऐं ह्रीं श्रीं ङं नं बोधिन्यै नमः । ऐं ह्रीं श्रीं चं धं ज्वालिन्यै नमः । ऐं ह्रीं श्रीं छं दं शोषिण्यै नमः । ऐं ही श्रीं जं थं वरण्योये नमः । ऐं ह्रीं श्रीं झं तं आकर्षिण्यै नमः । ऐं ह्रीं श्रीं ञं णं मायायै नमः । ऐं ह्रीं श्रीं टं ढं विवस्वत्यै नमः । ऐं ह्रीं श्रीं ठं डं हेम-प्रभायै नमः ।

उपरोक्त कला पूजन में "ऐं ह्रीं श्रीं" लक्ष्मी के बीज मंत्र है और इस प्रकार लक्ष्मी के सभी स्वरूप अपने शरीर में समाहित हो जाते है ।

लक्ष्मी प्राप्ति के साथ सुख, सम्मान, संतोष, तुष्टि पुष्टि आदि भी प्राप्त होनी चाहिए तभी तो उस धन का महत्व हैं, तभी उस प्राप्त धन का सही उपयोग है तभी तो जीवन में पूर्ण आनन्द और ऐश्वर्य है, इसीलिए इन द्वादश कला पूजन के बाद पूर्ण ऐश्वार्य के लिये गुरु

को अर्घ्य पात्र में जल, अक्षत, कुंकुम और पुष्प लेकर समर्पित करें। पहले मूल समर्पण करें फिर सोलह कलाओं में भी इसी प्रकार से अर्घ्य पात्र समार्पित करें ।

ऐं ह्रीं श्रीं सौं उं सोम-मण्डलाय षोडशी कलात्मने
अर्घ्य पात्रामृतायनमः ।

इस अर्घ्य को समर्पित करते समय उसका जल थोड़ा थोड़ा करके सोलह बार ग्रहण करें, इसके बाद गुरु की सोलह कलाओं का अर्घ्य पूजन करें ।

सोलह कला पूजन

ऐं ह्रीं श्रीं अं अमृतायै नमः । ऐं ह्रीं श्रीं आं मानदायै नमः । ऐं ह्रीं श्रीं इं तुष्ट्यै नमः । ऐं ह्रीं श्रीं ईं पुष्ट्यै नमः । ऐं ह्रीं श्रीं उं प्रीत्यै नमः । ऐं ह्रीं श्रीं ऊं रत्यै नमः । ऐं ह्रीं श्रीं ऋं श्रियै नमः । ऐं ह्रीं श्रीं ॠं क्रियायै नमः । ऐं ह्री श्रीं लृं सुधायै नमः । ऐं ह्रीं श्रीं लॄं रात्र्यै नमः। ऐं ह्रीं श्रीं एं ज्योत्स्नायै नमः । ऐं ह्रीं श्रीं ऐं हैमवत्यै नमः ऐं ह्रीं श्रीं ओं छायायै नमः । ऐं ह्रीं श्रीं औं पूर्णिमायै नमः । ऐं ह्रीं श्रीं अः विद्यायै नमः । ऐ ह्रीं श्रीं वः अमावस्यायै नमः ।

वास्तव में ही यह एक अद्भुत और आश्चर्यजनक गुरु लक्ष्मी पूजन हैं जिससे कि पूर्ण समृद्धता और ऐश्वर्यता प्राप्त होती है ।

इसके बाद गुरु के मूल मंत्र का "ॐ परमतत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः" मंत्र की एक माला फेरे और फिर अपने शरीर में ही गुरु को समाहित मान कर सामने किसी पात्र में दीपक लगा कर बैठे, बैठे ही समर्पण आमंत्रण समाहित आरती करें ।

पूर्ण सिद्ध आरती

अत्र सर्वानन्द - मये वेन्दव - चक्रे परब्रह्म - स्वरुपिणि परापर - शक्ती - श्रीमहा - गुरु देव - समस्त - चक्र - नायके - सम्वित्ति - रूप - चक्र नायकाधिष्ठिते त्रैलोक्यमोहन - सर्वाशपरि - पूरक - सर्वसंक्षोभकारक - सर्वसौ - भाग्यदायक - सर्वार्थसाधक - सर्वरक्षाकर - सर्वरोगहर - सर्वासिद्धीप्रद - सर्वानन्दरय - चक्र - समुन्मीलित - समस्त - प्रकट - गुप्त - गुप्ततर - सम्प्रदाय - कुल - कौलिनी - निगम - रहस्यातिरहस्य - परापर रहस्य - समस्त - योगिनी - परिवृत - श्रीपुरेशी - त्रिपुरसुन्दरी - त्रिपुर - वासिनी - त्रिपुरा - श्रीत्रिपुरमालिनी - त्रिपुरसिद्धा - त्रिपुराम्बा - तत्तच्चक्रनायिका - वन्दित - चरण - कमल - श्रीमहा - गुरु - नित्यदेव - सर्वचक्रेश्वर - सर्वमन्त्रेश्वर - सर्वविद्येश्वर - सर्वपीठेश्वर - त्रैलोक्यमोहिनी - जगदुत्पत्ति - गुरु - सर्वचक्रमय तन्चक्र - नायका - सहिताः स - मुद्रा, स - सिद्धयः, सायुधाः, स - वाहनाः, स - परिवाराः, सर्वो-पचारैः श्री परमतत्वाय गुरु परापरया सपर्यया पूजितास्तर्पिताः सन्तु ।

इसके बाद हाथ जोड़ कर क्षमा प्रार्थना सम्पन्न करें ।

श्रीनाथादि गुरु - त्रयं गण - पति पीठ त्रयं भैरवं सिद्धौध बटुक - त्रयं पद युगं दूती क्रमं मण्डलम् वीरानष्ट - चतुष्क - षष्टि - नवकं वीरावली - पंचकं, श्रीमन्मालिनी - मंत्रराज - सहितं वन्दे गुरोर्मण्डलम् ।

इस प्रकार पूर्ण लक्ष्मी साधना केवल एक वार किसी भी रात्रि को या दीपावली की रात्रि को सम्पन्न करने से पूर्ण महालक्ष्मी सिद्धी प्राप्त होती हैं ।

****

“निखिलेश्वरानन्द स्तवन साधना”

१. “असंम्भव कार्य को संम्भव करने हेतू प्रयोग”

साधन :- १०८ बार निखिलेश्वरानंद स्तवन का पाठ ११ दिन करें।

२. “मनोवान्छित कामना पूर्ती एवं लक्ष्मी सिद्धि एवं सारा दिन प्रसन्नता पूर्वक बिताने हेतु प्रयोग”

साधना :- नित्य सुबह स्तवन का पाठ करें ।

इस स्तोत्र से बड़ी कोई साधना नहीं है और इस स्तोत्र से बड़ा न तो कोई तत्व है और न ब्रह्म-ज्ञान, न तो कोई भक्ति है और न कोई चिन्तन, केवल मात्र इस स्तोत्र के पाठ करने से ही व्यक्ति अपनी मनोवांछित कामना पूर्ण कर लेता है ॥१०८॥

जो नित्य प्रातःकाल उठ कर एक बार इस स्तोत्र का पाठ कर लेता है, उसका पूरा दिन और पूरी रात प्रफुल्लता, प्रसन्नता और सफलता से युक्त होती है ॥ ११० ॥

इस स्तोत्र में लक्ष्मी तत्व का समावेश है, अतः मात्र इसका पाठ करने से ही जन्म-जन्म की दरिद्रता समाप्त हो जाती है ॥ १११ ॥

****

श्री गुरुगीता

गुरु गीता अत्यन्त गोपनीय रही है, पर उच्चकोटि के साधकों के लिए यह महत्वपूर्ण एवं दुर्लभ कही गई है । जो साधक या शिष्य नित्य एक बार इसका पाठ करते है, उसे प्रत्येक साधना में सिद्धि प्राप्त होती है, और साथ ही साथ इसकी वजह से गुरु की आत्मा से शिष्य की आत्मा का पूर्ण तादात्म्य स्थापित हो जाता है, फलस्वरूप गुरु की साधना का अंश गुरु की तपस्या का अंश और गुरु के ज्ञान का अंश स्वतः साधक को प्राप्त होने लगता है और वह शीघ्र ही साधनाओं में सिद्धि प्राप्त करता हुआ, उच्चकोटि का साधक बन जाता है ।

सिद्धाश्रम के समस्त साधकों के लिए प्रातः काल उठ कर गुरु गीता का पाठ करना अनिवार्य हैं ।

जो साधक भक्ति-भाव से गुरु-गीता को पढ़ता है अथवा सुनता है या लिखता है, वह समस्त भौतिक और आध्यात्मिक सुखों को प्राप्त करता है । जब सात्विक और शुद्ध गुण शिष्य के अन्दर उतर आते हैं, तब इस गुरु-गीता का ज्ञान स्वाभाविक रूप से उसे चैतन्यता प्रदान करता ही है, अतः नित्य प्रति गुरु-गीता का पठन, मनन तथा चिन्तन शिष्य के लिए एक आवश्यक क्रिया है ॥ गुरुगीता - २१८ ॥

जो साधक गुरु-गीता को लिखकर गुरु-पूजन करता है, उसे मोक्ष की प्राप्ति होती है, इसके प्रभाव से साधक के हृदय में गुरु-भक्ति स्वतः ही उत्पन्न होने लगती है ॥ गुरुगीता - २१९ ॥

संसार में निवास करने वाले सभी प्राणी गुरु-गीता के पाठ से अपनी सभी मनोकामनाओं को प्राप्त करते हैं, यह निश्चित है, अतः शिष्य को चाहिए, कि वह प्रतिदिन इस पावन गुरु-गीता का पाठ करे ॥ गुरुगीता - २२०॥

****

यह भी साधना हैं

१. तन, मन और धन से गुरु सेवा करना ।
२. गुरु प्रचार में हाथ बटाना और भाग लेना ।
३. अपने पास जो ज्ञान है उसका-आदान-प्रदान करना ।
४. किसी भी प्रकार से, किसी भी तरहा गुरु कार्य में अपना योगदान करना ।
५. अपने अनुभव (साधना से संबंधित हो या गुरु से संबंधित) इच्छुक साधकों, गुरु बंधुओं और गुरु भगिनियों के साथ बाटना ।
६. सभी को साधना क्रियाओं में मदत करना
७. सबसे महत्वपूर्ण बात यह की निस्संकोच गुरु की आज्ञा का पालन करना ।

****

परमहंस सद्गुरु स्वामी श्री निखिलेश्वरानन्द प्रणित टोटके एवं लघु साधनाएं

१. "नजर उतारने का मंत्र"

कई बार छोटे बच्चों या सुन्दर स्त्रियों को नजर लग जाती है, तब निम्न मंत्र पढ़ कर मोर पंख या लोहे की सलाई से झाड़ दें तो उसकी नजर दूर हो जाती है, इस मंत्र को सिद्ध करने की जरूरत नहीं हैं -

मंत्रः- ॐ नमो आदेश गुरु का गिरह बाज नटनी का जाया, चलती बेद कबूतर खाया, पीवे दारु खाय जो मांस रोग दोष को लावे फांस, कहां कहां से लावेगा गुद गुद में सुद्रावेगा बोटी बोटी में से लावेगा चामचाम में से लावेगा, नौ नाड़ी बहत्तर कोठा में से लावेगा, मार मार बन्दी करकर लावेगा, न लावेगा, तो अपनो माता की सेज पर पग रखेगा, मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ।।

****

२. "वशीकरण प्रयोग"

पहले दो दिन उपवास करे और तीसरे दिन फूल पर १०८ बार मंत्र बोलकर वह फूल या पुष्प जिसको भी दे वह वश में हो जाता हैं ।

मंत्रः- ॐ नमो भगवउ अरहउ महाविद्या वशीकरण भगवउ ठः ठः ठः स्वाहा ।

****

३. "स्वप्न में प्रश्न का उत्तर जानने का प्रयोग"

ऐसी कई समस्याएं या प्रश्न विचारणीय होते है जिसके बारे में तुरंत निर्णय लेना होता हैं ।

विधान- इस प्रयोग में रात्रि को पलंग पर बैठ कर अपना प्रश्न कागज पर लिखकर तकिये के नीचे रख दे और फिर पलंग पर बैठे बैठे ही २१ बार इस मंत्र को पढ़कर सो जाय तो रात्रि को स्वप्न में उस प्रश्न का शुभाशुभ दिखाई दे जाता है, और उसके अनुसार कार्य करने पर सफलता मिलती है ।

मंत्रः- ॐ शुक्ले महाशुक्ले ह्रीं श्रीं क्षीं अवतर अवतर स्वाहा ।

****

४. "किसी भी प्रकार का जहर उतारने का प्रयोग"

चाहे बिच्छू या सांप ने काटा हो और जहर चढ़ गया हो, तो उस काटे हुए स्थान पर हाथ फेरते हुए इक्कीस बार इस मंत्र को पढ़कर फूंक देने से जहर उतर जाता हैं ।

मंत्रः- ॐ चण्डे फुः ।

****

५. "रोग एवं बीज मंत्र"

इन बीज मंत्रो का नित्य प्रति जप करने से शरीर को विशेष शक्ति प्राप्त होती हैं । इन बीज मंत्रो का जप प्रातः खाली पेट, स्नान कर स्वच्छ वस्त्र धारण कर करना चाहिये।

☆ "ह्रीं" बीज मंत्र के जप से फेफड़े, गले और हृदय को शक्ति प्राप्त होती हैं ।

☆ "हूं" बीज मंत्र के जप से पेट, यकृत, बड़ी आंत एवं गर्भाशय को शक्ति प्राप्त होती हैं ।

☆ "ह्रां" बीज मंत्र के जप से गले एवं मस्तिष्क को विशेष लाभ पहुंचता हैं ।

☆ "ह्रूं" बीज मंत्र के जप से मूत्र नलिका एवं उसके संबंधित अंगों को विशेष शक्ति प्राप्त होती हैं ।

☆ "ह्रौं" बीज मंत्र के जप से एवं पेट से संबंधित समस्त व्याधियां शांत होती हैं ।

****

६. "स्वप्नेश्वरी मंत्र"

"जिसके द्वारा स्वप्न में प्रत्येक प्रश्न का उत्तर जाना जा सकता है"

वर्तमान समय में यह संभव नहीं है कि व्यक्ति लम्बे लम्बे अनुष्ठान कर सके जबकि उसे समस्याओं का समाधान मिलना भी आवश्यक होता है । इसी बात को ध्यान में रखकर में आगे कुछ ऐसे प्रयोग स्पष्ट कर रहा हूं जो वर्तमान काल एवं परिस्थिति के अनुकूल कम समय में एवं निश्चित रूप से फल प्रदान करने में समर्थ हैं । मुझे विश्वास है कि पाठक इनमें से एक या अधिक प्रयोग कर अवश्य ही लाभान्वित होंगे ।

बहुधा जीवन में ऐसे अवसर आ ही जाते है, जब किसी प्रश्न को लेकर मन डांवाडोल रहता है एवं तब हम किसी दैवी माध्यम की अपेक्षा करते है कि वह हमें सही मार्ग बताकर द्वन्द्व आने पर कि "यह उचित होगा या वह" मेरे मत से निश्चित रूप निम्न मंत्र का प्रयोग करना चाहिए जिसे सिद्ध करने अथवा जिस साधना में बैठने का कोई झंझट नहीं हैं ।

विधानःइस हेतु रात्रि में स्नान कर अपने प्रश्न को एक कागज पर लिख व तकिए के नीचे रख साधक को ऐसा विचार करना चाहिए कि वह स्वप्नेश्वरी देवी से प्रार्थना कर रहा है जो उस पर कृपालु होकर उसके प्रश्न का समाधान देंगी । उसे निम्न मंत्र की एक माला, तीन माला या पांच माला मंत्र जप करना भी विशेष सहायक होता हैं ।

मंत्रः- ॐ ह्रीं मानसे स्वप्नेश्वरी विचार्य विद्येवदवद स्वाहा ।।

इस प्रयोग का लाभ व्यक्ति अपने प्रतिदिन के जीवन को सुखी बनाने में कर सकता हैं ।

इसी स्वप्न विद्या का एक विशेष प्रयोग और भी है एवं इसमें भी कोई जटिल विधि विधान नहीं हैं । साधक इसे सिद्ध कर प्रमाणिक रूप से अपने प्रश्नें के उत्तर, समस्याओं के समाधान स्वप्न के माध्यम से प्राप्त कर सकता है । इस हेतु व्यक्ति रात को सोते समय खाट पर ही एक विशेष मंत्र जिसे "स्वप्नेश्वरी वाराही मंत्र" की संज्ञा दी गयी है । इस मंत्र का सौ बार जप करके सोये और नित्य नियम पूर्वक ११ दिनों तक करे तो उसे एक अनोखी सिद्धि प्राप्त होती है । भविष्य में कभी भी संकट आने पर या आवश्यकता पड़ने पर वह इस मंत्र का एक या ग्यारह बार उच्चारण करके सोये तो उसे निश्चित रूप से अपने संकट का समाधान मिलता ही है । इसका मंत्र इस प्रकार है -

मंत्रः- ।। ॐ ह्रीं नमो वाराहि अघौरे स्वप्न दर्शय दर्शय ठः ठः स्वाहा।।

****

७. "दुर्गा सिद्ध सम्पुट मंत्र"

दुर्गा सप्तशती तांत्रिक, मांत्रिक ग्रंथों में अत्यंत श्रेष्ठ प्रभाव पूर्ण पाठ है। जो साधक जिस भाव और जिस कामना से श्रद्धा एवं विधि विधान के साथ सप्तशती का पाठ करता है, उसे उसी भावनानुसार निश्चय ही फल प्राप्ति होती है क्योंकि दुर्गा सप्तशती अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष इन चारों पुरुषार्थों को प्रदान करने वाली हैं। इस बात का प्रत्यक्ष अनुभव अनगिनत साधकों को प्राप्त हो चुका है।

यदि नवरात्रि में इन मंत्रों की साधना सम्पन्न की जाय तो निश्चय ही सफलता प्राप्त होती है। यहां कुछ चुने हुए मंत्रों का उल्लेख किया जा रहा हैं जो विविध कामनाओं से युक्त है। इनका प्रयोग दो प्रकार से करते है। प्रथम दुर्गा सप्तशती के प्रत्येक श्लोक के साथ सम्पुट लगा कर तथा द्वितीय सीधे ही सम्बन्धित मंत्र की पांच मालाएं मंत्र जप करके -

(अ) *विपत्ति नाश के लिए :-*

शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे ।
सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोस्तुते ।।

(आ) *बाधामुक्त होकर धन-पुत्रादि प्राप्ति के लिए :-*

सर्वाबाधाविनिर्मुक्तो धनधान्यसुतान्वितः ।
मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशयः ।

(इ) *भय नाश के लिये :-*

सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते ।
भयेथ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवी नमोस्तुते ।।

(ई) *सर्वविध अभ्युदय के लिये :-*

ते सम्मता जनपदेषु धनानि तेषां
तेषां यशांसि न च सीदति धर्मवर्गः ।
धन्यास्त एव निभृतात्मजभृत्यदारा
येषां सदाभ्युदयदा भवती प्रसन्ना ।

(उ) स्वप्न में सिद्धि - असिद्धि जानने के लिए :-

दुर्गे देवि नमस्तुभ्यं सर्वकामार्थसाधिके ।
मम सिद्धिमसिद्धिं वा स्वप्ने सर्वं प्रदर्शयः ।

****

८. अपने प्रत्येक कार्य की सफलता को निश्चित कर सकते हैं, इस प्रयोग से ।

कार्य की सफलता के साथ ही व्यक्ति की क्षमता का आकलन होता है, पर ज्यादातर यह देखा जाता है, कि अधिकतर व्यक्ति कार्य को सम्पन्न करते समय उहापोह की स्थिति में रहते है, कि यह कार्य सफल होगा या नहीं, सफलता प्राप्त हो जायेगी या नहीं। कई बार वे अपने कार्यो में असफल भी हो जाते है, निराश हो जाते है। यदि यह स्थिति आपके साथ बनती है, तो इस प्रयोग को सम्पन्न कर आप निश्चित रूप से अपने कार्यो में सफलता प्राप्त कर सकते है। यदि आप यह लघु प्रयोग सम्पन्न कर लें, तो फिर असफलता जैसी कोई बात ही नहीं होगी।

आप जिस दिन अपने कार्य को प्रतिपादित करने केलिए जाना चाहते हैं। उस दिन प्रातः काल ही किसी पात्र में एक इलायची रख दें। उसके समक्ष निम्न मंत्र का ११ बार जप करें

मंत्रः- ॥ ॐ श्रीं सर्व कार्य साफल्यं सिद्धये ॐ नमः ॥

मंत्र जप समाप्त कर इलायची को अपनी जेब या पर्स में रख लें तथा कार्य सम्पन्न होने पर इलायची को मार्ग में किसी मन्दिर में चढ़ा दें। इस प्रोयग को आप कभी भी सम्पन्न कर सकते हैं।

****

९. "आप स्वयं रोगों को समाप्त कर सकते हैं इस प्रकार से"

स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन-मस्तिष्क का निवास होता है। परन्तु अब किसी रोग के होने पर आपको तनावग्रस्त होने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि आप चाहें तो इस अद्वितीय प्रयोग के माध्यम से स्वयं का रोग स्वयं ही समाप्त कर सकते हैं।

इस पांच दिवसीय प्रयोग को किसी भी सोमवार से प्रारम्भ करें। सोमवार के दिन विधिवत् रूप से गुरु पूजन सम्पन्न कर गुरु चित्र के समक्ष ही निम्न मंत्र का नित्य १०१ बार जप करें -

मंत्रः- ॥ ॐ क्लीं वं क्लीं रोग निवारणाय फट् ॥

****

१०. "अपने विरोधियों को आप यूं स्तब्ध कर दीजिए"

आप निम्न प्रयोग सम्पन्ना करें, अपके विरोधी स्वतः ही शांत होकर बैठ जायेंगे। जब भी आपके ऊपर आपके विरोधी हावी होते हुए दिखाई दें, उस समय ही पांच बार गुरु मंत्र का जप कर निम्न मंत्र का पांच मिनट तक मन ही मन जप कर लें। पांच मिनट पश्चात् जप समाप्त कर पुनः गुरु मंत्र का पांच बार जप करें

मंत्र :- ॥ ॐ क्लीं सकल शत्रु स्तंभिताय क्लीं ॐ फट् ॥

****

११. क्या आप धन के आगमन का स्थायी स्रोत चाहते हैं ?

आप धन के स्थायी आगमन स्रोत की प्राप्ति के लिए व्यथित हैं, परेशान हैं, तो आप इस लघु प्रयोग को सम्पन्न करके देखिये, आपकी परेशानी अवश्य समाप्त होगी।

किसी भी शनिवार की रात्रि को लाल रंग का वस्त्र बिछाकर उस पर गोल घेरा बनाते हुए चावल की पांच ढेरी बनाएं, प्रत्येक ढेरी पर एक-एक 'कमल बीज' स्थापित करें। ढेरियों के मध्य घी का दीपक लगायें। प्रत्येक बीज पर एक-एक पुष्प चढ़ा दें। सात दिन तक नित्य मंत्र का ६५ बार जप करें -

मंत्र :- ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं ॐ ॥

प्रयोग समाप्ति के पश्चात् उसी लाल वस्त्र में चावल की ढेरी सहित पांचो कमलबीज को बांध कर नदी में प्रवाहित कर दें।

****

१२. क्या आप अनावश्यक मोटापे से पीड़ित हैं ?

आपकी देह स्थूल हो गई है, शारीरिक कार्य न करने के कारण आपका मोटापा इस कदर बढ़ गया है, कि आप किसी कार्य को करने में स्वयं को असमर्थ पा रहे हैं।

आप प्रातः उठकर नित्य सूर्य नमस्कार आसन के प्रत्येक क्रम को करते हुए निम्न मंत्र का जप तीन बार करें। पहले हफ्ते पूर्ण क्रम एक बार करें। फिर दूसरे हफ्ते सूर्य नमस्कार आसन के क्रम को दो बार करें। इसी प्रकार क्रम बढ़ाते हुए पांच बार तक ले आयें। आपका मोटापा कुछ दिनों के नियमित प्रयोग से समाप्त हो जायेगा।

मंत्र :- ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ ॥

प्रत्येक आसन के साथ उपरोक्त मंत्र का ६ बार उच्चारण करें, आप स्वयं में शीघ्रता से परिवर्तन अनुभव करेंगें।

****

१३. **"आपका प्रत्येक दिन सफलतापूर्वक व्यतीत हो सकता है"**

अथक प्रयास के बाद भी आपके कार्य सम्पन्न नहीं होते और प्रतिदिन की असफलता से आप हताश हो रहे हैं तथा आप समझ ही नहीं पा रहे है, कि आप क्या करें, तो यह प्रयोग सम्पन्न करें।

आप नित्य 'गुरु मंत्र' जप करने के पश्चात् पांच मिनट तक मंत्र का जप करें :-

मंत्रः- ॥ ॐ ऐं सौं सौं ऐं ॐ ॥

उपरोक्त मंत्र का जप करने के पश्चात् आप पूजा स्थान से एक पुष्प उठाकर अपने पास रख लें। आपका दिन अवश्य सफलतापूर्ण व्यतीत होगा।

****

१४. **"बिना किसी दवा के समाप्त करिये थकान, तनाव को"**

उमंग, उल्लास, मुस्कराहट से परिपूर्ण रखिये अपने जीवन को और सदैव प्रफुल्लित और प्रसन्नचित रहिये इस प्रकार से। प्रातः उठकर सूर्य की ओर देखते हुए अपने दोनों हाथ ऊपर उठाकर निम्न मंत्र का ग्यारह बार जप करें।

मंत्रः- ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ॐ ॥

पूरे दिन आप स्वयं में ताजगी अनुभव करेगें।

****

१५. **"यौवन को चिरस्थायी रख सकते हैं"**

कभी आपने खिलती हुई कली को देखा है, शीत ऋतु में पहली धूप का अनुभव किया है, कितनी आनन्ददायक मस्ती और उमंग से युक्त होती है। ऐसा ही होता है यौवन, जिसे आप व्यर्थ का तनाव और चिन्ताओं से समाप्त कर देते हैं। यह तो ऐसा उल्लास और जोश से भरा समय होता है, जब आपमें कुछ कर दिखाने की लगन होती हैं। इसे यों ही व्यर्थ में समाप्त मत करिये, अपितु यह प्रयोग करिये :-

गुरु चित्र के समक्ष शांत भाव से बैठ जायें और अपना पूरा ध्यान गुरु चरणों में एकाग्र कर निम्न मंत्र का बीस मिनट तक जप करें:-

मंत्रः- ॥ ॐ ह्रीं श्रीं चिरयौवनाय सिद्धये ॐ ॥

बीस मिनट के पश्चात् ५१ बार गुरु मंत्र का जप कर ही अपने आसन से उठें। आप यह प्रयोग नित्य कर स्वयं अनुभव करें, कि इसका प्रभाव कितना तीक्ष्ण हैं।

****

१६ **"मन की चंचलता पर काबू पा सकते हैं"**

मन जिस गति से विचरण करता है, यदि उसे नापने का प्रयत्न किया जाय, तो यह सम्भव नहीं हो सकेगा, लेकिन इससकी तीव्रगामी गति पर यदि नियन्त्रण प्राप्त कर लिया जाय, तो यह व्यक्ति की श्रेष्ठता को द्विगुणित कर देवा है। साधक के लिए तो मन पर नियन्त्रण प्राप्त करना साधना का प्रथम चरण माना गया है। सिर्फ साधक ही नहीं, जो भी व्यक्ति अपने जीवन में अद्वितीय बनना चाहते है, उन सभी के लिए यह आवश्यक है।

गुरुवार के दिन प्रातः काल स्नान कर पीले वस्त्र धारण करें तथा गुरु चित्र के समक्ष दीपक जला कर अपने आसन पर खड़े हो कर 'सफेद हकीक माला' से निम्न मंत्र का एक माला मंत्र जप करें -

मंत्रः- ॥ ॐ श्रीं गुं स्फुरदमृत रूचये गुं श्रीं ॐ नमः ॥

जप के पश्चात् माला को धारण कर लें। यह प्रयोग २१ दिन तक करें, २१ दिन के बाद माला को नदी में प्रवाहित कर दें।

****

१७. **"अपने आपको असहाय मत समझिये"**

व्यक्ति जब स्वयं को असहाय समझने लगता है, तब उसे कोई भी शक्ति सफल नहीं बना सकती। एक कहावत है, कि 'ईश्वर भी उसी की

मदद करता है, जो अपनी मदद खुद करने को तत्पर होता है'। ईश्वर ने मनुष्य योनि को अत्यन्त श्रेष्ठ उपहार दिये हैं, अनेक अद्वितीय क्षमताएं प्रदान की है, जिन्हें साधनाओं के माध्यम से जाग्रत किया जा सकता है और श्रेष्ठता व अद्वितीयता प्राप्त की जा सकती है । अतः स्वयं को असहाय मानने से पहले यह प्रयोग सम्पन्न करिये, फिर कोई निर्णय लीजिए ।

प्रात : काल घी का दीपक लगा कर निम्न मंत्र का २१ बार जप २१ दिन तक करें :-

मंत्रः- ॥ ॐ हुं हुं महाबलाय हुं हुं ॐ फट् ॥

जब भी आपके समाने कोई विपरीत परिस्थिति उत्पन्न हो, इस मंत्र का मात्र पांच बार जप कर लें, इसके प्रभाव को अनुभव करें ।

****

१८. *आप अपनी दिनचर्या में इसे भी महत्व दें*

कहा जाता है - 'करत करत अभ्यास ते, जड़मति होत सुजान' । जब किसी विशेष क्रिया को अपनी नियमित दिनचर्या में शामिल कर लिया जाता है, तो उसका प्रभाव जीवन में निश्चित रूप से पड़ता ही है । आप भी निम्न नारायण ध्यान को अपनी दिनचर्या में स्थान दे कर देखें -

नमामि नारायण देव देवं ।
भजामि भक्तोदय भास्करं तं ।
ध्यायामि निखिलेश्वर पादपंकजं ।
जपामि शिष्योद्धर नामरूपं ।

इसका आश्चर्यजनक एवं अतिशीघ्र प्रभाव आप स्वयं अनुभव करेंगे।

****

१९. "अपने जीवन को खुशगवार बनाइए"

तनाव, कष्ट, परेशानियां, दुःख, सुख यह तो मानव जीवन में आये

क्षण - प्रतिक्षण परिवर्तन का स्वरूप हैं । यदि व्यक्ति इन अवस्थाओं को लेकर ही हरक्षण इसी में डुबा रहे, कि मैं दुःखी हूं, मेरे जितना अन्य कोई व्यक्ति कष्ट में नहीं है, तो वह धीरे - धीरे स्वतः ही बोझिल नीरस और उदास जीवन की ओर अग्रसर हो जाता है, और स्वयं की योग्यताओं का हनन करता चला जाता है।

आप स्वयं को खुशगवार बनाइए और प्रसन्नचित रखिए मात्र एक छोटे से प्रयोग से । आप सिर्फ प्रातः काल उठ कर उदित होने सूर्य की ओर देखते हुए खड़े होकर निम्न मंत्र का २१ बार जप करें मंत्र जप के पश्चात कार्य आरम्भ करे ।

मंत्र :- ॥ ॐ ह्रीं ऐं ह्रीं ॐ ॥

****

२०. क्या एकाकीपन आपके जीवन में बढ़ने लगा हैं ?

हमारा जीवन अनेक प्रकार की विषमताओं से भरा हुआ है, ऐसी विषमताओं के मध्य जो प्रमुख रूप से देखने में आता है, वह है जीवन में अकेलेपन का एहसास । यह एहसास व्यक्ति को कमजोर और भयभीत बनाता जाता है, निराशा और हीनता उसमें उपजने लगती है । यद्यापि यह एक मानसिक भावना है, किन्तु इसका प्रभाव इस कदर पड़ता है, कि व्यक्ति में अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न हो जाते है । अतः व्यक्ति को चाहिए वह ऐसी मानसिकता से पूर्ण रूप से निकलने का प्रयत्न करे और स्वयं को प्रसन्न रखे तथा वर्तमान परिस्थितियों के समक्ष निर्भयता से खड़ा रहे

नित्य प्रातः ही एक निश्चित समय तक 'सोऽहम' मंत्र का उच्चारण करते हुए ध्यान करें । ध्यान में लगभग आधे घण्टे तो अवश्य बैठें। आसन जिस प्रकार से आपको उपयुक्त हो वह अपनाएं, निश्चय ही आपका एकाकीपन समाप्त होगा ।

****

२१. क्या आप जिस कार्य को कर रहे हैं, उसमें हतोत्साहित हो रहे है ?

जव कोई व्यक्ति अपना कार्य आरम्भ करता है, तो निश्चय ही वह उत्साह और उमंग से परिपूर्ण होता है, लेकिन कुछ समय उपरान्त जव उस कार्य में निरन्तरता आ जाती है, तो उसकी एकरसता के फलस्वरूप वह व्यक्ति ज्यादा दिन तक स्वयं को उत्साहित नहीं रख पाता है और धीरे-धीरे निराश होता रहता है। यद्यपि कभी-कभी वह स्वयं भी समझ नहीं पाता, कि उसके साथ ऐसा क्यों घटित हो रहा है और उसकी इस निराशाजनक स्थिति के कारण कई बार उसे सुअवसरों से भी वञ्चित होना पड़ता है। यदि आप भी इसी प्रकार की मानसिकता से ग्रस्त हो रहे हैं, तो उसे समाप्त करने के लिए निम्न उपाय अपनाइए :-

किसी कागज पर कुंकुंम से निम्न मंत्र लिख कर उस पर दो पुष्प रख कर उसे अपने पास रख लें।

मंत्रः- ॥ ॐ हुं हुं फट् ॥

फिर उपरोक्त मंत्र का प्रातः कार्य पर जाने से पूर्व सात बार जप करके जायें। यह प्रयोग आप पांच दिन तक करें। नित्य घर वापिस आते समय कागज को किसी निर्जन स्थान पर फेंक दें।

****

२२. आप अपनी शारीरिक क्षमताओं को द्विगुणित करिए।

क्या आपको महसूस होता है, कि आप में कार्य करने की क्षमता कम होती जा रही है या आप जितने उत्साहपूर्वक कार्य के आरम्भ को सोचते है, कार्य के क्रियाशील हेने पर उतनी क्षमता से कार्य नहीं कर पाते? यदि ऐसा है, तो इस प्रयोग को सम्पन्न कर आप अपनी वास्तविक कार्य क्षमता का पूर्ण रूप से उपयोग करें।

किसी भी सोमवार के दिन से इस प्रयोग को आरम्भ करें। प्रातः काल किसी निश्तित समय पर पद्मासन या सुखासन में बैठ जायें और गुरु

पूजन कर 'निखिलेश्वरानन्द स्तवन' के १० श्लोक का अर्थ सहित उच्चारण करें।

आसन ऊनी प्रयुक्त करें तथा वातावरण सुगन्धित बना कर रखें। आप स्वयं में परिवर्तन अनुभव करेंगे।

****

२३. लक्ष्मी प्राप्ति मंत्र

किसी भी मंगलवार को दक्षिणाभिमुख हो कर लाल वस्त्र पहनकर मूंगे की माला से निम्न मंत्र की एक माला मंत्र जप करें -

मंत्रः- मर्कटेश महोत्साह सर्वशोकविनाशनं।
शत्रुन् संहार मे रक्ष श्रियं दापय मे प्रभो ॥

इस प्रकार पांच मंगलवार करे। पांचवें मंगलवार को हनुमान मंदिर में बेसन से बनी किसी मिठाई का भोग लगाकर माला नदी में प्रवाहित कर दें।

****

२४. "पीठ के रोगों से छुटकारा पाइए"

आमतौर पर पीठ की बीमारी उन लोगों में ज्यादा देखी जाती है जो दिन भर कुर्सी पर बैठ कर कार्य करते हैं, या फिर झुकने का कार्य ज्यादा रहता है, या किसी स्थाई स्थिति में बैठ कर कार्य करना पड़ता है। इससे पीठ की मांस पेशियों में अकड़न आ जाती है, कभी-कभी खिंचाव की स्थिति भी बन जाती है, जिसमें चिकित्सक पीठ के लिए व्यायाम करने का कहते है और कुछ दवाएं वता देते है, पर इन सबके साथ ही यदि आप इस मंत्र प्रयोग को अपनाते हैं तो निश्चय ही आप पीठ के अनेक सम्भावित रोगों से छुटकारा पा सकते हैं।

आप किसी भी बुधवार के दिन से पांच पीपल के पत्ते लेकर उन पर एक-एक सुपारी रख दें, फिर उनके समक्ष घी का दीपक तथा धूप लगा दें,

यदि आपके लिए पद्मासन सम्भव हो तो उसमें या जिस प्रकार से आपको सुविधा हो उस आसन में बैठ कर नित्य निम्न मंत्र का २१ बार उच्चारण कर लें ।

मंत्रः- ॥ ॐ क्रीं क्रूं क्रों ॐ ॥

यह प्रयोग सात दिन का है, सात दिन पश्चात पीपल के पत्ते तथा सुपारी लेकर उसे नदी में प्रवाहित कर दें ।

****

२५. क्या आप पैरों के दर्द से चलने में स्वयं को असमर्थ महसूस करते हैं ?

उम्र के साथ-साथ पैरो की ताकत धीरे-धीरे समाप्त होने लगती हैं और हड्डियों में कठोरता आने के कारण उनमें दर्द, मांस-पेशियों में अचानक खिंचाव आदि अनेक बीमारियों से व्यक्ति ग्रसित होते जाते है, जिसके कारण आप को चलने में कई प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। यदि आप भी पांव के रोगों से ग्रसित है, तो यह प्रयोग करके अपने रोग को नियंत्रित कीजिए ।

किसी भी बुधवार को लकड़ी के बाजोट पर लाल वस्त्र बिछा दें, उस पर मसूर की दाल से आठ वर्ग बनाएं। प्रत्येक वर्ग में सुपारी रख दें, प्रत्येक सुपारी का पूजन कुंकुम, पुष्प, अक्षत से करें। धूप लगा दें, फिर जिस प्रकार से सुविधा हो उस प्रकार से बैठ कर निम्न मंत्र का जप ४१ बार करें,

मंत्र :- ॥ ॐ ह्रीं ॐ ॥

यह प्रयोग नौ दिन का है ।

****

२६. "कार्य में निश्चित सफलता"

यदि आप किसी से मिलने, किसी कार्य का सफलता के लिए, यात्रा के लिए, या जरुरी काम के लिए घर से बाहर जा रहे है, तो बाहर जाने से पेहले एक 'सिद्धिफल' घर के बाहर डाल कर उस पर पांव रख कर बाहर निकल जाएं, तो निश्चित ही जिस कार्य के लिए आप जा रहे है, वह सफल होगा ही ।

****

२७. "बीमारी मिटाने का प्रयोग"

यदि घर में बीमारी हो या घर का कोई सदस्य बीमार हो और बीमारी जा ही नहीं रही हो तो मंगलवार के दिन सुबह सूर्योदय के समय पांच 'चिरमी के दाने' उस रोगी पर घुमा कर घर के बाहर दक्षिण दिशा की ओर फेक दें तो उसी क्षण से रोगी ठीक होने लग जाता है ।

****

२८. "व्यापार बढ़ोत्तरी का प्रयोग"

यदि दुकान नहीं चल रही हो या व्यापार में घाटा हो रहा हो अथवा व्यापार में बाधाएं आ रही हों तो दो "गोमती चक्र" लाल कपड़े में बांध कर दुकान की चौखट पर लटका दिये जाय, तो उसी दिन से व्यापार में वृद्धि होने लगती है और आश्चर्यजनक सफलता मिलने लगती है ।

****

२९. "धन लाभ"

इस पुस्तक में आर्थिक धन लाभ प्राप्त करने, आर्थिक उन्नति, अथवा आकस्मिक धन प्राप्ति के लिए एक महत्वपूर्ण प्रयोग दिया है, यदि शनिवार के दिन एक 'बिल्ली की नाल' ले कर मन में लक्ष्मी के आगमन की प्रार्थना करते हुए उसे आग में डाल दिया जाय तो निश्चय ही धन प्राप्ति के अवसर बढ़ जाते है और आकस्मिक धन प्राप्ति की संभावनाएं बहुत अधिक हो जाती है ।

****

३०. "विवाह प्रयोग"

यदि लड़के का या लड़की का विवाह नहीं हो रहा हो अथवा विवाह में बाधाएं आ रही हों तो गुरुवार के दिन पांच 'वीर बहुटी' ले कर अपने विवाह की प्रार्थना करते हुए उसे ठीक दोपेहर को उत्तर दिशा की ओर फेंके तो जल्दी ही विवाह कार्य सम्पन्न हो जाता है और मनोनुकुल स्थान पर लड़के या लड़की का विवाह हो जाता है ।

****

३१. "घर की कलह मिटाने का प्रयोग"

यदि घर में कलह हो, पति-पत्नि में मतभेद हो, या घर में सुख शान्ति नहीं हो, तो एक 'सीपी' लेकर रविवार के दिन उसे पानी में फेंक दें या नदी अथवा तालाब में यह कहते हुए बहा दें कि मेरे घर में सुख शान्ति बनी रहे, तो उसी दिन से घर की कलह मिट जाती है और सुख शान्ति बढ़ जाती हैं ।

****

३२. "शत्रु पर विजय प्राप्त करने का प्रयोग"

यदि शत्रु बढ़ गये हों और शत्रु परेशान कर रहे हो, या उनके द्वारा आक्रमण का खतरा हो, अथवा शत्रुओं से भयभीत हों तो एक 'तान्त्रोक्त फल' लेकर रविवार की रात को शत्रुओं का नाम लेकर, आग में जला दें तो उसी दिन से शत्रु शान्त हो जाते है और किसी प्रकार की शत्रु बाधा नही रहती ।

****

३३. "बच्चों के जीवन में दुर्घटना, एक्सीडेन्ट टालने का प्रयोग"

ना मालूम कब किस समय बच्चे के साथ दुर्घटना हो जाय, एक्सीडेन्ट हो जाये, एक्सीडेन्ट हो जाये, बीमार हो जाय या परेशानी पैदा हो जाय इसके लिए पहले से ही इसका उपाय कर देना उचित रहता है, 'मधुरुपेण एकमुखी रुद्राक्ष' ले कर उसे शिवलिंग पर रख कर पुत्र-पुत्री या संबंधित बालक का नाम ले कर उसके जीवन के लिए शुभकामनाए और दीर्घायु की प्रार्थना करते हुए काले धागे में वह रुद्राक्ष पिरो कर बालक के गले में या कमर में बांध दिया जाय तो इस प्रकार के सारे खतरे टल जाते है और संबंधित किसी प्रकार की चिन्ता नहीं रहती ।

****

३४. "स्वप्न में किसी प्रश्न का उत्तर जानने का प्रयोग"

मन में किसी प्रकार का प्रश्न हो और उसका हल नही मिल रहा हो तो वह प्रश्न कागज पर लिख कर उसके साथ एक 'हकीक पत्थर' रख कर पोटली बना दें और रात को सोते समय अपने सिरहाने रख दे । स्वप्न में उस प्रश्न का प्रमाणिक उत्तर मिल जाता है ।

****

३५. "सफलता प्राप्त करने का प्रयोग"

किसी भी कार्य की सफलता जीवन में आवश्यक है, फिर वह चाहे किसी व्यापारिक उद्देश से कही जावें या किसी से मिलने के लिए उनसे काम निकलवाने के लिए जाएं, आपके मन की बात पूरी अवश्य होनी चाहिए, तभी तो कार्य करने का मजा है, सामने वाला प्रभावित होकर आपकी इच्छा के अनुसार कार्य करे, इसलिए कार्य हेतु घर से रवाना होते समय एक "सिद्धिचक्र" अपनी जेब में अथवा बैग में रख लें, और जहां जाना हो, उस स्थान पर पहुचने से थोड़ी देर पहले वह सिद्धि चक्र उस ओर फेंक दें, इससे निश्चय ही इस कार्य में सफलता मिलती हैं।

****

३६. "कार्य सिद्धि के लिए"

बाहर रवाना होते समय किसी कार्य की सिद्धि के लिए घर से बाहर 'घुंघचू' बिखेट दें और उस पर पांव रख कर यदि व्यक्ति अपने कार्य के लिए निकल जाय, तो अवश्य ही जिस कार्य के लिए वह घर से निकला है, वह कार्य सिद्ध होता ही है।

****

३७. यात्रा की सिद्धि के लिए

यदि लड़की की सगाई, व्यापारिक अनुबन्ध या किसी विशेष कार्य के लिए बस से, ट्रेन से या वायुयान से यात्रा पर जाना चाहें, तो जाने से पहले घर से बाहर अपने ऊपर 'हकीक' घुमा कर बाई ओर डाल दें और फिर रवाना हो जाय, तो जिस कार्य के लिए आप जा रहे हैं, उस कार्य में अवश्य ही सफलता प्राप्त होती हैं।

****

३८. "कर्जा वसूल करने का प्रयोग"

यदि किसी को धन राशि दी हुई है, और वपिस वसूल नहीं हो रही है या वह आनाकानी कर रहा है अथवा व्यवधान पैदा कर रहा है तो इसका एक सफल प्रयोग इस पुस्तक के माध्यम से प्राप्त हुआ है।

रविवार को ठीक दोपहर में अर्थात् १२ बजे से १ बजे के बीच "हिरणवीज" लेकर उसे जमीन पर रख दें और उसके चारों ओर काजल का घेरा बना दें, फिर १०८ बार उच्चारण करें कि यह व्यक्ति मुझे एक सप्ताह के भीतर-भीतर मेरा कर्ज लौटा दे और फिर जमीन पर रखे हुए वे तीन बीज कहीं पर भी जमीन मे गाड़ दें तो इसका आशचर्यजनक प्रभाव होता हैं और वह स्वयं एक सप्ताह के भीतर रकम लौटा देगा।

****

३९. शीघ्र विवाह प्रयोग

इस टोटके को आजमाने पर इसके परिणाम अत्यन्त अनुकूल अनुभव हुए हैं। शुक्रवार के दिन शादी की इच्छा रखने वाला पुरुष, लड़की स्नान कर भगवान शिव का पूजन कर उन्हे १०८ बिल्व पत्र या पुष्प चढ़ाएं, और फिर यह मन में कामना करें कि मेरा शीघ्र विवाह सम्पन्न हो जाय, और उसमें किसी प्रकार की बाधा या परेशानी न आये। साथ ही भगवान शिव पर '२१ रुद्राक्ष' चढ़ा दें, उसी क्षण से वातावरण अनुकूल होने लगता है, और वह जिससे भी विवाह की आकांक्षा रखता है, या रखती है, तो मनोवांछित स्थान पर उसका विवाह सम्पन्न हो जाता हैं।

****

४०. "परीक्षा में सफलता प्राप्त करने का प्रयोग"

किसी भी प्रकार की परीक्षा हो अथवा आई.ए.एस. या कोई इन्टरव्यू हो, तो इस प्रयोग को अवश्य ही आजमाना चाहिए। परीक्षा देने के लिए जाते समय थोड़े से काले तिल चबा लें और अपनी जेब में 'साफल्य गुटिका' रख कर जावें तो उसे अवश्य ही उस दिन परीक्षा या इन्टरव्यू में सफलता मिलती ही हैं।

****

४१. "गमन रक्षा"

हमें कई बार कई स्थानों पर जाना होता है, और मन में चिन्ता बनी रहती है कि जाने पर कार्य सम्पन्न होगा या नहीं, या कार्य में कोई बाधा तो नहीं आयेगी, अथवा जिस अधिकारी के पास जा रहे है, वहां जाने पर जो मैं कार्य चाहता हूँ या जिस प्रकार से मै कार्य चाहता हूँ, उस प्रकार से कार्य सफल होगा या नहीं ऐसा सन्देह बराबर बना रहता है।

इसके लिए एक महत्वपूर्ण प्रयोग है, और इस प्रयोग सम्पन्न कर यदि किसी से मिलने जाय या यात्रा करे, तो अवश्य ही कार्य में सफलता और सिद्धि मिलती है, अधिकारी या हम जिससे बात करना चाहते है, वह मिल जाता है, और हमें किसी प्रकार की परेशानी नहीं आती।

यात्रा करने से पूर्व कुछ सरसों के दाने अपनी मुट्ठी में लेकर निम्न मंत्र का पांच वार उच्चारण कर यात्रा करे तो अवश्य ही कार्य में सिध्दि मिलती है,

मंत्र - ॐ क्लीं रक्ष रक्ष कार्यसिद्धयै ह्रीं ह्रीं फट्।

वस्तुतः यह मंत्र अत्याधिक उपयोगी है, और इसे सिद्ध करने की आवश्यकता नही है, केवल पांच वार उच्चारण करना ही पर्याप्त है।

****

४२. रोग नाश के लिए:-

कई बार घर में सदस्यों को रोग हो जाता है और इलाज करवाने पर भी कोई परो सफलता नहीं मि पाती, अगर पत्नी की बीमरि ठीक होती है तो पुत्र बीमार पड़ जाता है और पुत्र की बीमारी ठीक होती है तो खुद तकलीफ पाने लग जाता हैं, ऐसी किसी भी स्थिति के लिए यह प्रयोग आश्चर्यजनक रूप से सहायक हैं।

आधी रात के समय शान्त चित्त होकर दक्षिण दिशा की ओर मुह कर बैठ जाय और सामने महाकाली का चित्र रख दें, उसके सामने मुट्ठी भर काली मिर्च और एक मुट्ठी सरसों मिलाकर रख दें, तथा स्वयं उस काली मिर्च और सरसों को रोगी के ऊपर घुमाकर महाकाली के सामने उसे रख दे, और ठीक आधी रात के समय हकीक माला से मिम्न मंत्र की पांच माला मंत्र जप करे।

मंत्र :- रोगानशेषानपहंसि तुष्टा रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान्
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयंन्ति॥

उसके बाद जब पांच माला मंत्र जप पूरा हो जाय, तो उस सरसों और काली मिर्च को पुनः रोगी के ऊपर सात बार घुमाकर घर के बाहर गड्ढा खोदकर जमीन में गाड़ दें, ऐसा करने पर आश्चर्यजनक रूप से लाभ प्राप्त होता है, और तुरन्तु आराम होने लगा जाता हैं।

इस प्रयोग को सैकड़ों लोगों ने किया है और प्रत्येक बार सफलता मिली है, वास्तव मे ही यह प्रयोग अपने आप में आश्चर्यजनक रूपसे सिद्धिदायक है, पर इसमे शर्त यह है कि मंत्र जप ठीक आधी रात को हो।

****

४३. "संकट निवारण प्रयोग" :-

कई बार अचानक जीवन में संकट आ जाते है, और ऐसा लगता है कि इस संकट से मुक्ति पाना असम्भव है, यह संकट शत्रुओं का डर, राज्य भय इन्कमटैक्स का भय या अन्य किसी प्रकार का संकट हो सकता है।

मेरा यह अनुभव रहा है, कि किसी भी प्रकार का संकट हो या भय व्याप्त हो गया हो, तो यह प्रयोग अपने आप में आश्चर्यजनक रूप से सफलता दायक है। यह प्रयोग अपने आप में अत्यन्त ही तेजस्वी और भय से मुक्ति दिलाने में सर्वाधिक उपयोगी है, इसका प्रयोग सम्पन्न करते ही दूसरे तीन से अनुकूल वातावरण बनने लग जाता है, और दो-दिन दिन में कार्य सिद्ध हो जाता हैं।

यह प्रयोग रात्रि को ठीक १२ बजे लाल आसन पर लाल धोती पहिन कर पूर्व को ठीक १२ बजे लाल आसन पर माला से ११ माला मन्त्र जप कर ले, जब तक मंत्र जप पूरान हो जाय तब तक अपने आसन से उठे नहीं, और न कोई अन्य कार्य यथा - पानी पीना, लघु शंका करना आदि कार्य सम्पन्न नही करे। मंत्र जप सम्पन्न होते ही कार्य में अनुकूलता प्रारम्भ होने लग जाती है और कार्य सफल हो जाता है , इसमें आधी रात का समय और हकीक माला दोनो आवश्यक हैं।

मंत्र :- ऊँ ऐं क्लीं चामुण्डायै विच्चै ऊँ ग्लौं हूं क्लीं जूं सः
ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ऐं हीं
क्लीं चामुण्डायै विच्चै ज्वल हं सं लं क्षं फट् स्वाहा ॥

इस प्रयोग को पाठकों को अपनाना चाहिए और स्वंय अनुभव करना चाहिए, कि इस मंत्र में कितनी अधिक शक्ति और उपयोगिता है।

४४. "निश्चित कामना पूर्ति प्रयोग"

कई बार हमने जीवन में ऐसे कार्य सम्पन्न करने होते है जो हमारे जीवन में आवश्यक होते है, यदि वे कार्य समय पर न हों तो हानि हो सकती है, या परेशानियां हो सकती हैं।

उदाहरण के लिए इन्टरव्यू में सफलता, शीघ्र नौकरी लगना, व्यापार में उन्नति होना या कोई ऐसा कार्य जो रूका हुआ हो और पूरा नहीं हो रहा हो, तो ऐसे कार्य की सफलता के लिए यह प्रयोग अपने आप में चमत्कारी है, इस प्रयोग को सम्पन्न करते ही कार्य सिद्धि हो जाता है, और कुछ ही दिनों में हमारा कार्य सम्पन्न हो जाता है।

रात्रि के समय स्नान कर धोती पहिन कर लाल आसन पर बैठे, इसमें हकीक माला से ५१ माला मंत्र जप अनिवार्य है, यह पूरा मंत्र जप एक ही रात में सम्पन्न हो जाना चाहिए और बीच में उठना या अन्य कार्य करना वर्जित है।

मंत्रः- ऊँ तत्सवितुर्वरेण्यं महत्कम्या ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल स्वाहा धियो योनः प्रचोदयात् परं ज्योतिर्महा ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल स्वाहा परो रजसे सावदो परं ज्योति कोटि-चन्द्रर्का दीन् ज्वल ज्वल स्वाहा ओमापो ज्योति रसो मृत ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्। सर्व-तेजो ज्वल ज्वल स्वाहा।

यह मंत्र अपने आप में इतना तेजस्वी और अद्वितीय मंत्र है कि इसे मैने अपने जीवन में सैकड़ो बार आजमाया होगा, और एक बार भी यह प्रयोग असफल नहीं हुआ, एक बार मैं मुकदमे में बुरी तरह उलझ गया था, सारी परिस्थितियां मेरे विपरीत हो रही थीं, तब मैंने इस प्रयोग को आजमाया और उसके दूसरे दिन से ही आश्चर्यजनक रूप से परिस्थितियां अनुकूल होने लगी, और उस कठिन मुकदमे को

में जीत गया, इसी प्रकार उस प्रयोग से कई लोग इन्टरव्यू में सफल हुए, प्रमोशन प्राप्त किया है, और जीवन में पूर्ण अनुकूलता प्राप्त की है।

वास्तव में ही यह प्रयोग कलियुग में चमत्कारिक है, और किसी भी प्रकार की कार्य सिद्धि में यह प्रयोग तुरन्त सफलतादायक है।

****

४५ "पुत्र प्राप्ति प्रयोग"

पाठकों को विश्वास आवे या न आवे, पुरन्तु पुत्र प्राप्ति से संबन्धित यह प्रयोग सर्वथा गोपनीय, महत्वपूर्ण और दुर्लभ रहा है, मैने अपने जीवन में अनुभव किया है, कि चाहे किसी प्रकार की बाधा हो, परन्तु इस प्रयोग को सम्पन्न करने पर अवश्य ही पुत्र प्राप्त होती है।

यह प्रयोग पुत्र प्राप्ति की इच्छा रखने वाली महिला को करना चाहिए, कृष्ण पक्ष की अष्टमी को स्नान कर अपने बाल धोकर आसन पर बैठ जाय और सामने भगवान कृष्ण का चित्र रख दे, यह बाल-गोपाल का चित्र होना चाहिए, जिसमें श्री कृष्ण घुटनो के बल चल रहे हो, या गोप ग्वालों के साथ खेल रहे हों।

तत्पश्चात् हकीक माला से निम्न मंत्र की २१ माला मंत्र जप करे, और उसके बाद ही भोजन करे, नियम पूर्वक एक समय भोजन करे, इसके अलावा वह दूध या फल ले सकती है पर अन्न मात्र एक समय ही ले।

इस प्रकार बराबर तीन महीने करे, बीच में रजस्वला समय आने पर इस प्रयोग को पांच दिन के लिए बंन्द कर दे, बाकी सारे समय में प्रयोग बराबर चालू रखे।

तीन महीने समाप्त होते - होते उसे निश्चित ही गर्भ धारण हो जाता है, और वह ठीक समय पर अत्यन्त ही सुन्दर बालक को जन्म देती है, मैंने इस प्रयोग को लगभग सौ से ज्यादा साधिकाओं और शिष्याओं पर कराया है, और प्रत्येक बार आश्चर्यजनक रूप से सफलता मिली है, एक बार भी यह प्रयोग निष्फल नहीं गया।

मंत्रः- ह्रीं हरि हर पुत्र - लाभाय शत्रु - नाशाय
मद- गज वाहनाय महाशास्त्राय नमः ॥

तीन महीने के बाद जब प्रयोग पूरा हो जाय तब पांच बालकों को भोजन करा दें, और उन्हें वस्त्र आदि भेंट करे, वास्तव में ही पुत्र प्राप्ति के लिए विश्व का यह तेजस्वी मंत्र है, जिसके सम्पन्न करने पर निश्चय ही लाभ होता हैं।

****

४६. सर्व सिद्धि प्रयोग

यह प्रयोग मुझे एक उच्चकोटि के महात्मा से मिला था, इससे पूर्व कई साधनाए सम्पन्न की थीं, पर किसी भी साधना में पूर्ण सफलता नहीं मिल पा रही थी, इससे मैं सर्वथा निराश और हताश हो गया था, मेरे मन में यह विचार आ गया था कि कलियुग में ये सारे मंत्र निष्फल और प्रभावहीन हैं।

ऐसे ही दिनों में मेरी भेंट एक संन्यासी से हो गयी थी, जो केदारनाथ के मार्ग में एक गुफा में रहते थे, मैंने उससे चर्चा की कि प्रयत्न करने पर भी मुझे किसी भी साधना में सफलता नहीं मिल पा रही हैं, तो उन्होंने एक सर्वसिद्धि मंत्र दिया और कहा कि कोई भी साधना सिद्ध करनी है तो उससे पेहले यह प्रयोग सम्पन्न कर लिया जाय तो निश्चय ही साधना में सिद्धि प्राप्त होती है।

सबसे पहले अपने गुरु का पूजन कर गुरु मंत्र का पांच लाख जप करें, और फिर इस सर्वसिद्धि प्रयोग की एक सौ माला मंत्र जप करे ।

मंत्र :- ॥ ॐ ज्वालिके ज्वल ज्वल सर्व पाप दोष
हर हर सर्व सिद्धिं प्रदाय प्रदाय सिद्धये नमः ॥

इसके बाद मूल साधना प्रारम्भ की जाय और ऐसा करने पर जिस साधना या सिद्धि को आप प्राप्त करना चाहते है, उसमें अवश्य ही सफलता प्राप्त होती हैं ।

घर आकर मैंने लगभग इसी तरीके से आठ महाविद्याए सिद्ध की, छिन्नमस्ता और धूमावती जैसी कठिन साधनाओं को भी मैंने इसी योग के द्वारा सिद्ध किया और मैंनं अनुभव किया कि वास्तव में ही यह प्रयोग अपने आप में आश्चर्यजनक रूप से सफलतादायक है, और चाहे कठिन से कठिन साधना या सिद्धि प्राप्त करनी हो तो इस प्रयोग को सम्पन्न करने पर अवश्य ही सफलता मिलती हैं ।

****

४७. ''पति वशीकरण प्रयोग''

यदि पति का मन भटक गया हो, किसी दूसरे स्त्री में आसक्त हो गया हो या उससे प्यार नहीं मिलता हो तो यह प्रयोग निश्चय ही सफलतादायक है ।

दो हकीक पत्थर लेकर उस पर गोरोचन से पति का नाम लिखकर सूर्योदय के समय, पूर्व की ओर घर के बाहर फेंक दे तो पति का वशीकरण हो जाता हैं ।

****

४८. क्या शत्रु आप पर हावी होते जा रहे हैं ?

शत्रु आप पर हावी होते जा रहे है, आप उन्हें समाप्त करने का प्रयास करते हैं, फिर भी उनकी ताकत, उनका हौसला कम होने के स्थान पर बढ़ता ही चला जा रहा है ती इस प्रकार से करिये शत्रु का नाम किसी काले रंग के वस्त्र पर लिख दें । उस पर 'विदुभय चक्र' को स्थापित करें, फिर इसे किसी वृक्ष के तीन पत्तों के साथ बांध कर निर्जन स्थान में फेंक दें ।

****

४९. 'सिद्धि गुटिका'

स्वतः ही आपके समस्त कार्य सम्पन्न कर देगी, यदि इसे आप अपने पास रखें ।

'सिद्धि गुटिका' को किसी भी शुभ मुहुर्त मों गुरू पूजन कर अपने पास रख लें । छः माह पश्चात आप सिद्धि मुटिका को नदी में प्रवाहित कर दें ।

****

५०. 'हमजाद् अपने-आप में अद्वितीय है

शुक्रवार के दिन किसी मज़ार पर जाकर उस पर लोबान जलायें तथा 'हमजाद' चढ़ाते हुए अपनी मनोकामना बोलें । वह कामना अवश्य पूर्ण होगी । यह कामनापूर्ति का तीव्रतम प्रयोग है । इसमें किसी मंत्र की आवश्यकता नहीं है ।

****

५१. "दुःस्वप्न" हरण यंत्र -

हं	सं	षं	पुं
षं	दं	घं	जं
नं	पं	मं	दं
चं	पं	जं	दं

दिये गये मंत्र को भोजपत्र पर अष्टगंध की स्याही से तथा अनार की कलम से अंकित कर उस पर 'स्वप्नेश्वरी यंत्र, स्थापित करें और उसका सामन्य पूजन करें। तत्पश्चात् इस यंत्र को वस्त्र सहित सोते समय सिर के नीचे रखे, तो बुरे स्वप्नों, का दिखाई देना समाप्त हो जाता है। अगले दिन यंत्र को मंदिर में चढ़ा दें।

****

५२. क्या आपका शिशु सदैव रोता रहता है ?

शिशु का कोमल स्पर्श, उसकी पवित्रता युक्त आंखे, उसका निर्मल चेहरा देखकर अनायास ही हृदय उसकी ओर आकृष्ट हो उठता है, शिशु के मां - बाप भी दिन भर उसके साथ व्यतीत करते हुए अनके अनमोंल क्षणों की पूंजी सहेज लेते है लेकिन यह सब तब बेचैन कर देता है जब शिशु हर समय रोता रहे, वैसे शिशु की, स्वयं को अनुभव कराने की, स्वयं की ओर आकर्षित करने के लिए रोना ही एकमात्र अभिव्यक्ति रहती है, परन्तु अकारण रोते रहना उचित नहीं हैं।

यदि आप का शिशु लगातार रोता रहता है और आपको लगता है, कि उसे रोने की आदत पड़ गई है, तो काले रंग के धागे में, 'वृहन्त' को पिरो कर मंगलवार केदिन पहना हें। ४० दिन पश्चात वृहन्त को धागा समेत नदी में प्रवाहित कर दें। किसी मंत्र जप की आवश्यकता नहीं है।

****

५३. "हनुमन्मन्त्र चमत्कारानुष्ठान"

श्री शंकराचार्य हनुमान साधना के अनन्य ज्ञाता माने जाते है, उन्होनें हनुमन्मंत्र चमत्कारानुष्टान पद्धति की रचना की, इस महा ग्रन्थ में साधना के सम्बन्ध में विशेष विवरण इत्यादि दिया हुआ है, मूल रूप से बीस मंत्र प्रधान हैं।

इस बीस मन्त्रों में से पाठकों हेतु सात मंत्र दिये जा रहे है, मंगलवार के दिन अपनी बाधा के अनुसार अपने कार्य के अनुसार हनुमान पूजन कर एक मंगलवार से दूसरे मंगलवार तक ग्यारह हजार मंत्र का जप करना है, इस अनुष्ठान हेतु मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त 'हनुमान गुटिका' लाल कपड़े में बाध कर काले डोरे से अपने गले में धारण कर हनुमान चित्र के आगे अनुष्ठान सम्पन्न करना है, पाठक गण मंत्र को ध्यान से देखेगे तो मंत्र में ही स्वतह कार्य विवरण है।

(अ) "हनुमान जी को प्रश्न करना और वीर्ता बढ़ाने का प्रयोग"

मंत्रः- ।। ॐ नमो हनुमते रूद्रावताराय विश्वरूपाय अमित - विक्रमाय प्रकटपराक्रमाय महाबलाय सूर्य - कोटिसमप्रभाय रामदूताय स्वाहा ।।

(आ) "शत्रु संहारण, रोग बाधा निवारण और वशीकरण हेतू"

मंत्र :-।। ॐ नमो हनुमते रूद्रावताराय सर्वशत्रुसंहारणाय सर्वरोगहराय सर्ववशीकरणाय रामदूताय स्वाहा ।।

(इ) "विपत्ति नाश हेतू"

मंत्र :- ।। ॐ नमो हनुमते रूद्रावताराय भक्तजनमनः कल्पना-कल्पद्रुमाय दुष्टमनोरथस्तम्भनाय प्रभंजन प्राणप्रियाय

महाबलपराक्रमाय महाविपत्तिनिवारणाय पुत्रपौत्रधनधान्यादि-विविध सम्पत्प्रदाय रामदूताय स्वाहा ॥

(ई) "रक्षा प्राप्ति हेतू"

मंत्र :- ॥ ॐ नमो हनुमते रूद्रावताराय वज्रदेहाय वज्र नखाय वज्रसुखाय वज्ररोम्णे वज्रनेत्राय वज्रदन्ताय वज्रकराय वज्रभक्ताय रामदूताय वाहा ॥

(उ) "तंत्र नाश के लिए"

मंत्र :- ॥ ॐ नमो हनुमते रूद्रावताराय परयन्त्रमन्त्रतन्त्र त्राटकनाशकाय सर्वज्वरच्छेदकाय सर्वव्याधिनिकृन्तकाय सर्वभयप्रशमनाय सर्वदुष्टमुखस्तम्भनाय सर्व कार्य सिद्धिप्रदाय रामदूताय स्वाहा॥

(ऊ) "विघ्न नाश हेतू"

मंत्र :- ॥ ॐ नमो हनुमते रूद्रावतारय पंचवदनाय पश्चिममुखे गुरुडाय सकलविघ्ननिवारणाय रामदूताय स्वाहा ।

(ए) "इतर योनी दोष निवारण हेतू"

मंत्र :- ॥ ॐ नमो हनुमते रूद्रावतारय देवदानवयक्ष-राक्षस-भूत-प्रेत-पिशाच-डाकिनी-दुष्टग्रह बन्धनाय रामदूताय स्वाहा ।

****

५४. रोगमुक्त रूद्र प्रयोग :-

भगवान रूद्र कष्ट को दूर करने वाले मृत्यु को समाप्त करने वाले और रोगों का नाश करने वाले हैं, यह प्रयोग अत्याधिक उपयोगी है यदि कोई भी व्यक्ति या पुरूष, रोगमुक्त हो और काफी इलाज कराने पर भी उस रोग से छुटकारा न मिलता हो अथवा अचानक बीमार व्यक्ति की हालत खराब हो गई हो और पह मरणासन्न हो गया हो तो यह प्रयोग अपने आप में अचूक है, और एक प्रकार से देखा जाय तो उसे नया जीवन देना वाला है ।

स्नान करके साधक उत्तर की ओर मुह कर सफेद आसन पर बैठे और सफेद धोती धारण करे, उसके बाद सामने भगवान "रूद्र का चित्र" स्थापित करे, फिर उसमें प्राण प्रतिष्ठा सम्पन्न करें इसके बाद साधक सोमवार की रात से इस प्रयोग को प्रारंभ करे, और निम्न मंत्र का मात्र १०८ ब्रार अच्यारण करे इस प्रकार ११ दिन करने पर यह प्रयोग सिद्ध हो जाता है ।

मंत्र:- ॐ भगवान देव - देवेश शूल - मृद-वृष - वाहन ।
इष्टानिष्टे समाचक्ष्य मम सुप्तस्य शाश्वते ॥
ॐ नमो जाय त्रिनेत्राय पिंगलाय महात्मने ।
वामाय विश्व-रुपाय स्वप्नाधिपतये नमः
स्वप्नं कथ्य में तुभ्यं सर्व - कार्येष्वशेषत :
क्रिया - सिध्दि विधास्यामि त्वत्प्रसादन्महेश्वर ॥

जब साधना सिध्द हो जाय तब जरुरत पड़ने पर किसी भी रोगी के सिरहाने किसी तांबे के पात्र में थोड़ा सा जल लेकर इस मंत्र का मात्र तीन बार उच्चारण कर वह जल थोडा सा रोगी को पिला दे और बाकी उसके शरीर पर छिड़क दें तो आश्चार्यजनक परिणाम प्राप्त होता है और वह मृत्यु के पंजे से छूट कर तेजी के साथ स्वस्त होने लगता है । वास्तव में हीं मैने इस प्रयोग को जितनी बार भी आजमाया है उतनी ही बार मुझे पूर्ण सफलता प्राप्त हुई हैं ।

****

५५. रोग नाशक प्रयोग

घर में किसी को बुखार आर गया हो, या किसी प्रकार का रोग हो या ऐसी स्थिति बन गई हो कि घर में कोई न कोई रोगी बना रहता हो रोग पर बराबर चर्चा होती रहती हो और रोग नियन्त्रण में नहीं आ रहा हो या बीमारी से परेशान हो गया हो तो यह प्रयोग अचुक माना हैं ।

किसी भी शुक्रवार को अपने सामने तीन मंगे के टुकड़े रख दे, जो मंत्र सिध्द प्राण प्रतिष्ठा युक्त हो, फिर इस पर जलधार चढ़ावे और फिर दूध से धोकर फिर जल चढ़ावे, जल चढ़ाते समय निम्न मंत्र का १०८ बार उच्चाारण करे, इसके बाद मूंगे के टुकडे, निकाल कर अलग रख दें, और वह दुग्ध मिश्रित जल पूरे घर में छिड़क दे तथा एक चम्मच रोगी को पिला दे। इस प्रकार मात्र तीन दिन प्रयोग करें, तो घर से बीमारी हमेशा - हमेशा के लिए चली जाती है, और रोगी को तुरन्त आराम मिलता है।

मंत्र :- ॥ ऊँ ऐं हीं क्लीं क्लौं क्लौं अर्हं नमः ॥

****

५६. विवाह का इच्छाधारी प्रयोग

यह प्रयोग शुक्रवार से प्रारंभ करे और सात दिन करे एक बडे कोरे कागज पर बड़ा सा यंत्र काली स्याही से बनाओ खाना पूरी कर लो, अपने नाम की जगह अपना पूरा नाम लिख ले। इच्छा क्या है ? को स्थान पर विवाह लिखो जिससे विवाह करना चाहे उसके बाप का नाम लिखो फिर इष्ट का नाम लिखो।
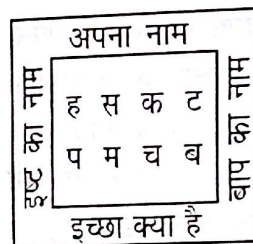
शुक्रवार से स्नान कर शुध्द होकर केशर से नित्य एक यंत्र बनाओ और फिर उस यन्त्र को मौली से लपीटकर सामने अगरबत्ती दीपक लगाओ, तथा फूलों के बीच रखकर जल में प्रवाहित कर दो, इस प्रकार सात दिन करो, तो अगले कुछ ही दिनो में लड़की का बाप अपनी लड़की का विवाह इच्छाधारी यंत्र करने वाले के साथ स्वयं कर देगा। यह प्रयोग आजमाया हुआ हैं।

५७. "बाल रोग निवारक प्रयोग"

क्लौं

यादि बालक को पीड़ा हो या बरावर बीमार बना रहता हो अथवा रह रह कर डरता हो तो यह प्रयोग अत्यधिक महत्वपूण है।

रविवार के दिन भोजपत्र अथवा कागज पर केसर से यह यंत्र बनादे और उसके ऊपर 'रुद्र गुटिका' रख दे फिर भोजपत्र में वह गुटिका समेट कर कच्चे रेशमी धागे से सात अथवा नौ आंटे देकर मादलिये (तावीज) में रख गले में या हाथ में बांधने से बाल भय समाप्त हो जाता है और उस पर किसी भी प्रकार की पीड़ा भूत प्रेत नजर टोना - टोटका होता है तो दूर हो जाता है और बालक स्वस्थ रहता है।

यह प्रयोग महत्वपूर्ण है और आजमाया हुआ है।

****

५८. "सर्वकामना सिध्दि प्रयोग"
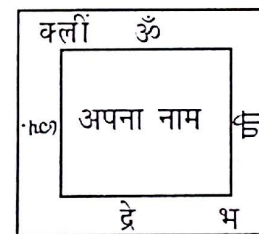
रविवार के दिन प्राप्त : स्नान कर भोजपत्र पर निम्न यंत्र बाना ले और बीच में अपना नाम लिख ले फिर इसके ऊपर हाथी के नाखून का टुकड़ा रख दे और मूंगे की माला से पांच माला मंत्र जप करे।

मंत्रः- ऊँ नमः मणिभद्रे हुं ॥

मंत्र जप के बाद हाथी का नाखून भोजपत्र में लपेट कर चाँदी के ताबीज में भरकर बांह पर बांध दे तो उसकी समस्त मनोकामना पूरी होती है, और जहां भी जाता है उसे सफलता मिलती है। वस्तुतः यह प्रयोग आश्चर्यजनकं सिध्दिदायक है, और एक दिन का प्रयोग है।

****

५९. घर में चोरी ना होने का मंत्र

विधान : रात को सोते समय केवल एक वार इस मंत्र का उच्चारण कर सोने से, घर में चोरी नहीं होती ।

मंत्र : जले रक्षतु वाराह : स्थले रक्षतु वामनः ।
अटव्यां नारसिंहश्च सर्वतः पातु केशव : ।।
जले सक्षतु नन्दीशः स्थले रक्षतु भैरव : ।
अटव्यां वीरभद्रश्च सर्वतः पातु शंकर : ।।
अर्जुनः फाल्गुनो जिष्णुः किरीटी खेत वाहनः ।
वीभत्सुर्विजायः कृष्णः सव्यसाची धनंजय ।।
तिस्रो भार्याः कफल्लस्य दाहिनी मोहिनी सती ।
तासां स्मरण मात्रेण चोरो गच्छति निष्फल : ।
कफल्लकः कफल्लकः कफल्लकः

****